अंधेरे से उजाले की ओर

सनातन गुरु यीशु के द्वारा

अंधेरे से उजाले की ओर

यीशु ने कहा, “संसार की ज्योति मैं हूँ। जो मेरा अनुसरण करता है,
वह अन्धकार में कभी नहीं चलेगा वरन् वह जीवन की ज्योति प्राप्ट करेगा।”
(योहन ८:१२)

असतो मा सदगमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

मझे असत्य से सत्य की ओर ले चल।
मुझे अंधकार से ज्योति की ओर ले चल।
मुझे मृत्यु से अमृतम की ओर ले चल।

अंधेरे से उजाले की ओर

शुरु में शब्द था और शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द ही परमेश्वर था। उन्हीं के द्वारा परमेश्वर ने सब कुछ बनाया, उनके बिना कुछ नहीं बना। उनमें जीवन है और जीवन लोगों के लिये ज्योति है। वह ज्योति अंधेरे में चमकती रहती है, और अंधेरा उसे नहीं रोक सकता।

(योहन १-१:५)

मर्म के साथ स्वर्गदूत की बात

(मरकुस १:१, लुका १:२६-३८)

यह परमात्मा के पुत्र प्रभु यीशु के शुभ संदेश की शुरुआत है।

इस्राएल देश के नासरत नगर में मर्म नाम की एक यहूदी लड़की थी, जिसकी मंगनी जोश नाम के लड़के के साथ हुई थी। मर्म की शादी होने से पहले परमात्मा ने अपने दूत को उसके पास भेजा। दूत ने मर्म के पास आकर कहा, "हे मर्म, परमात्मा की कृपा तुझ पर हुई है।" मर्म ने सोचा, "यह कौन है, और यह कैसी कृपा है?" तब परमात्मा के दूत ने कहा, "डर मत, देख, तू गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी, और तू उनका नाम यीशु रखना। वे महान होंगे और सब से बड़े परमात्मा के पुत्र कहलायेंगे और प्रभु परमात्मा उनको उनके पूर्वज दाविद का सिंहासन देंगे। और उनका राज्य हमेशा तक रहेगा।" मर्म ने कहा, "ये सब कैसे हो सकता है? अभी तक तो मेरी शादी भी नहीं हुई है।" तब दूत ने कहा, "यह ईश-आत्मा और उनके सामर्थ से होगा, क्योंकि उनके लिये कुछ भी करना असंभव नहीं है।" मर्म ने कहा, "जैसा परमात्मा चाहते है, मेरे साथ वैसा ही हो।" तब दूत वहां से गायब हो गया।

जोश का सपना

(मती १:१८-२५)

इसके बाद उसके मंगेतर जोश को पता चला कि मर्म गर्भवती है। वह इस बात से परेशान था, कि यह किसका बच्चा होगा? वह उसको बदनाम भी नहीं करना चाहता था, क्योंकि वह एक अच्छा आदमी था। इसलिये उसने सोचा, "अगर मैं लोगों से कहुंगा कि मर्म ऐसी है वैसी है, तब उसकी बदनामी हो जायेगी। और नियम के अनुसार उसको मार देंगे।" तब वह चुपचाप उसको छोड़ने के लिये सोचता है।

जब सोचते-सोचते उसको नींद आ गई, तब परमात्मा ने उसके पास भी अपना दूत भेजा। और स्वर्गदूत ने आकर जोश से कहा, " हे जोश, तू मर्म के

SR. CLAIRE SMMI

साथ शादी करने के लिये मत डर। क्योंकि उसके पेट में जो है, वे परमात्मा की तरफ से है, किसी आदमी का नहीं है। वह एक पवित्र पुत्र होगा और तू उसका नाम यीशु रखना। जैसा परमात्मा ने वायदा किया था कि एक कुंवारी लड़की गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी जो अपने लोगों के पापों से उनको मुक्त कराऐगा, वह वायदा अभी पूरा हो रहा है।" तब जोश की नींद खुली और उसने कहा, "अरे, यह सच्ची बात है? जो मर्म के पेट में है, वह परमात्मा की तरफ से है, किसी आदमी का नहीं है!" और उसने स्वर्गदूत की उस बात पर विश्वास किया, और मर्म को शादी करके अपने घर लाया। लेकिन उसके पास तब तक नहीं गया, जब तक उसका पुत्र नहीं हो गया।

प्रभु यीशु का जन्म

(लुका २:१-७)

उस समय यहूदी लोग रोमी सरकार के गुलाम थे। रोमी सम्राट औगुस्तुस ने यह आज्ञा निकाली, की हर एक आदमी अपना नाम लिखाने के लिये अपने-अपने पूर्वजों के नगर जाये। जोश जो दाविद के वंश का था, वह भी अपना नाम लिखाने के लिये बैतलहम नगर अपनी पत्नी मर्म के साथ आया। और वहां धर्मशाला में कहीं पैर रखने के लिये भी जगह नहीं थी, इसलिये जोश और मर्म गाय के गौशाले में रहे।

अभी मर्म के बच्चा होने का दिन आ गया, और उसने वहां अपने पहले पुत्र को जन्म दिया। और उसे एक कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा।

चरवाहों को प्रभु यीशु के जन्म के बारे में बताया जाना

(लुका २:८-२०)

उस नगर के बाहर मैदान में कुछ चरवाहे थे, जो रात में अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल कर रहे थे। तब अचानक परम स्वर्ग से परमात्मा के दूत वहां आ गये, और अपने चारों ओर परमात्मा की ज्योति देखकर चरवाहे बहुत डर गये। तब दूत ने उनसे कहा, "तुम डरो मत, मैं तुम्हारे लिये एक खुशी की खबर लेकर आया हूं! आज तुम्हारे लिये बैतलहम में मुक्तिदाता का जन्म हुआ है। तुम्हारे लिये उसकी यह पहचान होगी, कि तुम उसको कपड़े में लिपटा और चरनी में रखा पाओगे।"

तब अचानक परम स्वर्ग से बहुत स्वर्गदूत आये और परमात्मा की जै-जैकार करते-करते कह रहे थे, “परम स्वर्ग में परमात्मा की महिमा हो, और धरती में उन लोगों को शांति मिले, जिनको देखकर परमात्मा खुश हैं।” उनके जाने के बाद चरवाहों ने बहुत खुश हो कर कहा, “चलो, हम बैतलहम जाकर उस बच्चे को देखते है!” तब उन्होंने बैतलहम आकर जोश, मर्म और उस बच्चे को चरनी में रखा हुआ देखा, जैसा स्वर्गदूत ने उनको बताया था। और उन्होंने बच्चे के माता-पिता को बताया की स्वर्गदूत ने इसके बारे में हमको क्या-क्या बताया था।

इसके बाद वहां से लौट कर वे सब को बताने लगे कि यहां क्या हुआ है। जिन्होंने भी ये सब सुना, वे बहुत चकित रह गये।

परमात्मा के वायदे का पूरा होना

(लुका २:२१-३३)

जब यह बच्चा आठ दिन का हो गया, तब उस दिन यहूदियों की रीति के अनुसार उनका खतना हुआ। उस दिन जोश और मर्म ने उनका नाम यीशु रखा। यह नाम परमात्मा ने उस समय मर्म को अपने दूत के द्वारा बताया था, जब मर्म गर्भवती नहीं थी।

इसके कुछ समय बाद मर्म और जोश इस्राएलियों की राजधानी यरुशलेम में भेंट चढ़ाने के लिये गये, जैसा परमात्मा का नियम था कि हर औरत जब उसका बच्चा हो, तब वे यहां आकर मेरे लिये भेंट चढ़ाये। और वहां परमात्मा के मंदिर में शिमयौन नाम का एक आदमी था, जिससे परमात्मा ने वायदा किया था कि जब तक तू अपनी आँखों से लोगों के मुक्तिदाता को नहीं देख लेगा, तब तक तू नहीं मरेगा। जब जोश और मर्म मंदिर में थे, तब शिमयौन भी परमात्मा की इच्छा से वहां आया, और परमात्मा ने शिमयौन को बताया, “यह वही है!” तब शिमयौन ने उस बच्चे को अपनी गोद में पकड़ कर परमात्मा को धन्यवाद देकर उनकी महिमा की। उसने कहा, “मैंने अपने आँखों से लोगों को छुड़ाने वाले को देख लिया है, अब मैं शांति से मर सकता हूं।” फिर उसने ये भी कहा, “यह बच्चा इस्राएलियों के लिये गर्व का कारण और अन्य जातियों के लिये उजाला होगा। लेकिन लोग इसके खिलाफ भी खड़े होंगे।” इसके बाद उसने बच्चे को आशिर्वाद देकर उसकी मां को दे दिया।

SR. Claire. SMMI

और मर्म और जोश इन सब बातों को सुनकर चकित रह गये।

ज्योतिषियों का आना

(मती २:१-१२)

इसके कुछ समय बाद यरुशलेम में पूर्व देश से ज्योतिषि इसलिये आये क्योंकि उन्होंने एक विशेष प्रकार के तारे को आकाश में देखा। जब उन्होंने इसके बारे में खोज-बीन की, तब उनको पता चला कि इस्राएल में एक विशेष राजा का जन्म हुआ है। तब वे उसको देखने के लिये यरुशलेम गये। और वहां जाकर उन्होंने लोगों से पूछा, “वह बच्चा कहां है, जो पैदा हुआ है और यहूदियों का राजा है? हम उनको प्रणाम करने के लिये यहां आये हैं।”

उस समय इस्राएल का राजा हेरोदेस था। जब उसने उन ज्योतिषियों के बारे में सुना, तब उसने कहा, “वे किस राजा की बात कर रहे हैं? यहाँ का राजा तो मैं हूं! और हमारे घर में किसी लड़के का जन्म नहीं हुआ।”

फिर भी उसने यहूदी धर्मगुरुओं को बुलाकर पूछा, “हमारे धर्म-ग्रंथ के अनुसार यहूदियों के सब से बड़े राजा का जन्म कहां होने वाला है?” उन्होंने बताया, “बैतलहम में, क्योंकि परमात्मा ने यह कहा था,” हे यहूदा प्रदेश के बैतलहम, तू एक छोटा गाँव होकर भी यहूदा के विशेष नगरों में से एक है। क्योंकि तुझ में से एक नेता पैदा होगा, जो मेरी जनता इस्राएल का चरवाहा बनेगा।”

तब राजा ने उन ज्योतिषियों को बुलाकर उन से उस तारे के बारे में सब-कुछ पूछा, और उनसे कहा, “तुम बैतलहम नगर जाकर इस बात का पता करो, और जब तुम को वह मिल जायेंगे, मुझे भी बताना, तब मैं भी जाकर उसको प्रणाम कर सकुंगा।”

यह सुनकर ज्योतिषि चले गये और रास्ते में उन्होंने दुबारा उस विशेष तारे को देखा जिस को देखकर वे फिर बहुत खुश हुए। और बैतलहम में वे उस घर में पहुंचे, जहां यीशु जी थे। तब उन्होंने अन्दर जाकर यीशु जी को प्रणाम किया और उनको सोना, धूप और गन्धरस दिया। उस रात परमात्मा ने उनको बताया, “तुम वापिस हेरोदेस राजा के पास नहीं जाना, क्योंकि वह इस बच्चे को मारना चाहता है।” यह सुनकर वे दूसरे रास्ते से वापिस चले गये।

प्रभु यीशु का बचना

(मती २:१३-२३, लुका २:४०)

तब परमात्मा के दूत ने सपने में जोश को बताया, “हेरोदेस इस बच्चे को मारने के लिये ढूंढ़ रहा है। इसलिऐ अपने बच्चे और पत्नी को लेकर, मिस्र देश को चले जा। और जब तक मैं ना कहूं, तब तक वहीं रहना।” तब जोश रात ही को उन दोनों को लेकर मिस्र देश में चला गया, और वहां तब तक रहा जब तक हेरोदेस नहीं मर गया।

दूसरी ओर जब हेरोदेस ने देखा कि जोतिषियों ने मेरे साथ चालाकी की, तब वह क्रोध से लाल-पीला हो गया। उसने जोतिषियों के बताये समय के हिसाब से बैतलहम और उसके आस-पास के गाँवों में रहने वाले सब के सब बालकों को जो दो वर्ष से छोटे थे मरवाने की आज्ञा देकर मरवा दिया। इस कारण वह पूरा गाँव शोक में डूब गये।

इस के कुछ समय बाद परमात्मा के दूत ने जोश से सपने में कहा, “हेरोदेस राजा मर गया है। अब तू अपनी पत्नी और बच्चे को लेकर इस्राएल देश में वापिस जा!” तब जोश मर्म और बच्चे को लेकर इस्राएल देश में आ गया, और नासरत नगर में रहने लगा।

और यीशु जी में परमात्मा की बुद्धि और आशीष बढ़ती रही।

गुरु योहन लोगों को बताते हैं कि मुक्तिदाता आने वाले हैं

(मरकुस १:४-११, मती ३:१३-१७)

यीशु जी के जवान होने के बाद, इस से पहले कि वे परमात्मा का काम शुरु करते, योहन नाम का एक आदमी प्रचार करने लगा। वह रेगिस्तान में रहता, और ऊंट के रोओं के सादे और झर-झरे कपड़े पहनता, और खाने के लिये वन मधु और टिड्डियों का प्रयोग करता था।

वह इसलिये आया कि वह ज्योति देनेवाले मुक्तिदाता के बारे में बताये और सब लोग उसके द्वारा विश्वास भी करें। वह खुद तो ज्योति देनेवाले नहीं था, पर केवल उस के बारे में गवाही देने के लिये आया था, जिनकी सच्ची ज्योति हरेक आदमी पर चमकती रहती है।

उसने यह भी कहा, “अधर्म के रास्ते को छोड़ कर अपने को धर्म के रास्ते में चलने के लिये मन फिराओ और जल दीक्षा लेकर शुद्ध हो जाओ।” सारे यहूदा प्रदेश और सभी यरुशलेम में रहने वाले लोग उसके पास आने लगे, और उसकी बात सुनकर बहुत लोगों ने दुःखी होकर कहा कि हम पापी हैं, और उन्होंने उसके हाथ से यर्दन नदी में जल दीक्षा लेकर दिखाया कि हम मन फिराते हैं।

उसने कहा, “मेरे बाद एक दूसरा आदमी आने वाले हैं, और वे मुझ से इतने अधिक बड़े हैं कि मैं इस लायक भी नहीं हूं कि झुककर उनके जूते के फीते को खोल सकूं। मैंने तो तुम को जल दीक्षा से शुद्ध किया, पर वे तुम को ईश-आत्मा से शुद्ध कराऐंगे!”

उसी समय यीशु जी भी गुरु योहन के हाथ से जल दीक्षा लेने के लिये नदी के किनारे में पहुंचे। गुरु योहन ने यह कहकर उनको रोकना चाहा, “मुझे तो आपके हाथ से जल दीक्षा लेने की जरूरत है, और आप मेरे पास आये हैं?” लेकिन यीशु जी ने उनको उत्तर दिया, “अभी ऐसा ही होने दो, क्योंकि यहीं परमात्मा की इच्छा है।” यह सुनकर गुरु योहन ने यीशु जी की बात मान ली।

जब यीशु जी पानी से बाहर निकले, उसी समय उनके लिये स्वर्ग खुल गया और उन्होंने ईश-आत्मा को कबूतर की तरह अपने में उतरते देखा। और स्वर्ग से यह आवाज सुनायी दी, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत खुश हूं!”

गुरु योहन की मौत

(मरकुस ६:१७-२१)

उस समय हेरोदेस राजा का पुत्र हैरोदेस अंतिपस वहां का राज्यपाल था। वह अपने भाई की पत्नी हेरोदिया को अपने घर लाया था। इसलिये गुरु योहन ने उससे कहा, “जब कि तुम्हारो भाई जीवित है, तुम उसकी पत्नी को क्यों रख रहे हो? तुम को ऐसा नहीं करना चाहिये।” इसलिये राज्यपाल की यह प्रेमिका गुरु योहन से बहुत नफरत करने लगी और वह मौके की तलाश में रहती थी की कैसै उसको मरवाया जाये। यह बात सुनकर राज्यपाल धर्म-संकट में पड़ गया और उसने उसको जेल में बन्द कर दिया, जहां उसको कोई दुःख नहीं पहुंचा सके। क्योंकि वह उसे एक पवित्र और धार्मिक आदमी समझता था और इसलिये उसे देखकर डरता था, और वह उसकी बातों को अच्छी तरह से सुनता था।

इसके बाद राज्यपाल के जन्म दिन में उसके सब खाश-खाश आदमी, दरबारी और सेनापति आये थे, क्योंकि उनको राज्यपाल ने आमंत्रित किया था। उसी दिन हेरोदिया को एक अच्छा मौका मिल गया और उसने अपनी लड़की को नाचने के लिये महल में भेजा। उस लड़की ने इतना अच्छा नाच दिखाया जिसे देखकर राज्यपाल और मेहमान खुश हो गये। तब राज्यपाल ने वायदा किया, "तू जो भी मांगेगी, मैं दुंगा, वह चाहे मेरा आधा राज्य ही क्यों ना हो!"

तब लड़की अपनी मां के पास आयी और पूछा, "मां, मैं क्या मांगू?" तब मां ने कहा, "बेटी, तू कह दे कि मुझको गुरु योहन का सिर काट कर दिया जाए।" तब लड़की ने अन्दर जाकर राज्यपाल से कहा, "मुझे गुरु योहन का सिर काटकर एक थाली में दे दो!"

यह सुनकर राज्यपाल बहुत उदास हुआ, पर वह ना तो अपने वायदे को तोड़ना चाहता था और ना ही मेहमानों के सामने शर्ममिंदा होना चाहता था, इसलिऐ उसने गुरु योहन का सिर काटने के लिये एक सैनिक को भेजा और वह कैद खाने में उसका सिर काट कर एक थाली में ले आया। तब राज्यपाल ने उसको लड़की को दे दिया और लड़की ने अपनी मां को दे दिया।

इसके बाद जब गुरु योहन के शिष्यों को इस बात के बारे में पता चला, वे आकर उसकी लाश को ले गये और उसे दफना दिया।

प्रभु यीशु परीक्षा में निष्फल नहीं हुए

(मरकुस १:१२-१५)

यीशु जी के जल दीक्षा लेने के बाद ईश-आत्मा ने उनको रेगिस्तान को जाने के लिये कहा। वे चालीस दिन तक वहां रहे। और वहां शैतान ने हर प्रकार से लालच देकर उनकी परीक्षा ली, ताकि यीशु जी परमात्मा के सामने पाप में गिर जाये। लेकिन आंखिर में शैतान अपनी योजना सफल नहीं हुआ। और जब चालीस दिन पुरे हो गये, तब स्वर्गदूतों ने आकर यीशु जी की सेवा-टहल कर दी।

इसके बाद यीशु जी गलील प्रदेश में गये और परमात्मा के शुभ संदेश का प्रचार करने लगे। उन्होंने लोगों से कहा, "परमात्मा के राज्य का समय नजदीक आ गया है। इसलिए अधर्म का रास्ता छोड़कर शुभ संदेश में विश्वास करके चलो!"

प्रभु यीशु चार मछवारों को शिष्य बना रहे हैं

(मरकुस १:१६-२०)

एक दिन यीशु जी गलील के समुद्र के किनारे से जा रहे थे। तब उन्होंने शिमौन और अन्द्रियास नाम के दो भाइयों को देखा जो समुद्र में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वे मछुवारे थे। यीशु जी ने उनको बुलाकर कहा, “तुम मेरे साथ आओ! जैसे तुम मछलियों को जमा करते हो, वैसे ही मैं तुम को लोगों को जमा करनेवाला बनाउंगा, जिससे लोग मुझे जानेंगे और वे मुझ में विश्वास करेंगे।” तब वे तुरन्त अपना काम छोड़कर यीशु जी के साथ चल पड़ें और उनके शिष्य बन गये।

थोड़ा आगे जाकर यीशु जी ने फिर दूसरे लोगों को देखा। उनमें दो भाई याकूब और योहन भी थे। वे नाव में बैठकर अपने जालों को ठीक कर रहे थे। यीशु जी ने उनको बुलाया और वे अपने पिता को मजदूरों के साथ नाव में छोड़कर यीशु जी के साथ चले गये।

प्रभु यीशु आदमी में से भूत निकाल रहे हैं

(मरकुस १:२१-२८)

विश्राम के दिन यीशु जी कफरनहूम नगर में आकर सत्संग भवन में गये, और वहां परमात्मा की बातों के बारे में प्रचार करने लगे। लोग यीशु जी के उपदेश सुनकर चकित रह गये क्योंकि वे दूसरे धर्म गुरुओं की तरह नहीं, पर अपने अधिकार से उनको उपदेश दे रहे थे।

उस समय उनके सत्संग भवन में एक आदमी ऐसा था जो भूत के वश में था। उसने चिल्ला कर कहा, “हे नासरत में रहने वाले यीशु, तुम को हमसे क्या काम? क्या आप हमको नाश करने के लिये आये हो? मैं जानता हूं कि आप परमात्मा के भेजे हुए पवित्र आदमी हैं!”

लेकिन यीशु जी ने उसे डांट कर कहा, “चुप रह! और इस आदमी में से बाहर निकल जा।” तब भूत उस आदमी को मरोड़ कर जोर से चिल्लाते हुऐ उस में से बाहर चला गया।

यह देखकर सभी लोग बहुत चकित रह गये और एक-दूसरे से पूछने लगे, “कितनी अदभुत बात है कि वे भूतों को आज्ञा देते हैं और वे भी उसकी आज्ञा मानते हैं! और उनके उपदेश नए और अधिकार सहित होते है।”

इस प्रकार यीशु जी की चर्चा जल्द ही पूरे गलील प्रदेश के कोने-कोने में फैल गई।

प्रभु यीशु शमौन की सास को अच्छा कर रहे है

(मरकुस १:२९-३९)

यीशु जी सत्संग भवन से बाहर आकर शमौन और अन्द्रियास के घर में गये। तब लोगों ने उनको बताया की शमौन की सास को बहुत बुखार है। यीशु जी उसके पास गये, और उन्होंने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया। और उसी समय उसका बुखार ठीक हो गया और वह यीशु जी की सेवा करने लगी।

फिर शाम के समय लोग बहुत बीमारों और भूत से भरे लोगों को यीशु जी के सामने लाये। नगर के लोग दरवाजे के बाहर जमा हो गये। यीशु जी ने बहुत प्रकार के बिमारियों से पीड़ित लोगों को अच्छा किया और बहुत लोगों में से भूतों को निकाला। यीशु जी भूतों को बोलने नहीं देते थे क्योंकि भूत जानता था की यीशु जी कौन हैं।[१]

यीशु जी सुबह अंधेरे ही में उठे और गाँव से बाहर एकांत जगह में जाकर प्रार्थना करने लगे। इससे थोड़ी देर बाद शमौन और उसके साथी यीशु जी को ढूंढ़ने के लिये गये। जब वे मिल गये, तब उन्होंने कहा, “आप कहां थे, सब लोग आप को ढूंढ़ रहे हैं!”

तब यीशु जी ने उनसे कहा, “आओ, आस-पास के गाँवों में जाते हैं। मुझको वहां भी परमात्मा के बारे मैं बताना है, क्योंकि इसलिए ही मैं संसार में आया भी हूं।” और तब वे वहां से गलील के गाँवों में गये और यीशु जी सत्संग भवनों में परमात्मा के बारे में बताने लगे और उन्होंने भूतों को भी निकाला।

---

१ प्रभु यीशु क्यों नहीं चाहते थे कि लोगों को पता चले की वे कौन हैं? जिस मुक्तिदाता का इंतजार लोग कर रहे थे, वे यीशु हैं। लेकिन यीशु अभी तक यह नहीं चाहते थे की लोगों को यह बात पता चले। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि लोग मुक्तिदाता का काम गलत समझते थे। वे सोचते थे कि मुक्तिदाता उनको रोमी गुलामी से छुड़ायेगा, जब की यीशु उनको मौत और पाप की सजा से मुक्ति देने वाले थे। परमेश्वर की इच्छा आदमी की इच्छा से बहुत बढ़कर है!

प्रभु यीशु एक कोढ़ी को अच्छा करते हैं

(मरकुस १:४०-४५)

फिर एक दिन यीशु जी के पास एक कोढ़ी आदमी आया। वह उनके पाँव में गिरकर विनती करने लगा, “अगर आप चाहें, तब मैं अच्छा हो सकता हूं!” तब यीशु जी को दया आई और उन्होनें अपना हाथ उस पर रखकर कहा, “हां, मैं चाहता हूं, तू अच्छा हो जाऐ।” और उसका कोढ़ उसी समय जाता रहा और वह बिल्कुल ठीक हो गया।

तब यीशु जी ने उसको अच्छी तरह से समझा कर कहा,” सुन, तू अपने चंगाई के बारे में किसी से मत कहना, लेकिन सीधे जाकर परमात्मा के नियम के अनुसार पुरोहित को दिखाकर भेट चढ़ाना, तब सब लोगों के लिये यह सबूत होगा कि तू चंगा हो गया है।”

पर उसने यीशु जी का कहना नहीं माना और लोगों को अपने चंगाई के बारे में बताने लगा। इस कारण वहां बहुत भीड़ जमा हो गई, और यीशु जी नगरों में नहीं जा सके। और वे एकांत स्वानों में रहने लगे। फिर भी गाँव-गाँव से लोग उनके पास आते थे।

प्रभु यीशु लकवे पड़े आदमी को अच्छा करते हैं

(मरकुस २:१-१२)

इसके कुछ दिन के बाद यीशु जी कफरनहूम नगर में आये। तब यह खबर फैल गयी कि वे घर पर हैं, तब इतने लोग जमा हुए कि दरवाजे पर पैर रखने के लिऐ भी जगह नहीं मिली। तब यीशु जी उनको परमात्मा की बातें सुनाने लगे।

उसी समय चार लोग एक लकवे पड़े आदमी को खाट पर रख कर यीशु जी के सामने लाए। लेकिन भीड़ के कारण वे उसको उनके सामने नहीं ला सके। इसलिये उन्होंने छत पर चढ़कर छत खोल दिया और उस रास्ते से उस आदमी को यीशु जी के सामने उतारा।

जब यीशु जी ने उन लोगों का विश्वास देखा, तब लकवे पड़े आदमी से कहा, “बेटा, तेरे पाप माफ हुए।”

वहां कुछ धर्म गुरु भी बैठे थे, जो यह सुनकर सोचने लगे कि यह आदमी ऐसा कैसे कह सकता है? परमात्मा के अलावा कोई दूसरा पाप माफ नहीं कर सकता है! यह तो परमात्मा की बुराई कर रहा है!

यीशु जी ने अपने मन में जान लिया कि वे क्या सोच रहे हैं। उन्होंने धर्म गुरुओं से कहा, "तुम ऐसा क्यों सोचते हो? अधिक आसान क्या है, लकवा पड़े आदमी से यह कहना कि उठ, अपनी खाट को उठा कर चल या यह कहना कि तेरे पाप माफ हो गये? मैं तुम को साबित कर सकता हूं कि मैं जो परमात्मा की ओर से आया हूं, मुझे धरती पर पाप माफ करने का अधिकार भी हैं।" यीशु जी ने लकवा पड़े आदमी से कहा, "मैं तुम से कहता हूं, उठ, अपने खाट को उठा कर घर जा!"

यह सुनकर लकवा पड़ा आदमी जल्दी से उठा, और अपनी खाट उठाकर सबके देखते-देखते चला गया। और यह देखकर सभी आश्चर्य-चकित रह गये, और उन्होंने परमात्मा की बड़ाई की कि हम ने ऐसा अद्भुत काम कभी नहीं देखा।

प्रभु यीशु एक चुंगी लेने वाले को शिष्य बनाते है

(मरकुस २:१३-१७)

कफरनहूम से बाहर आकर यीशु जी गलील के समुद्र के किनारे में जा रहे थे। फिर सारी भीड़ उनके पीछे आ गयी और यीशु जी ने उनको परमात्मा का वचन सुनाया।

चलते-चलते यीशु जी ने लेवी नाम के एक आदमी को देखा जो चुंगी घर में बैठकर रोमी सरकार के लिये चुंगी जमा कर रहा था। यीशु जी ने उसे बुलाकर कहा, "मेरे साथ आओ!" और वह खड़ा हुआ और उनके पीछे चल पड़ा, और उनका शिष्य बन गया।

इसके बाद यीशु जी अपने शिष्यों के साथ उसके घर में खाना खा रहे थे। चुंगी लेने वाले और दूसरे लोग भी जो धर्म गुरुओं कि नजर में पापी माने जाते थे, वे भी उनके साथ थे, क्योंकि बहुत ऐसे लोग भी यीशु जी के साथ गये थे। धर्म गुरुओं ने यह देखकर की यीशु जी चुंगी लेने वाले और दूसरे पापियों के साथ खाना खा रहे थे, यीशु जी के शिष्यों से कहा, "तुम्हारे गुरु पापियों के

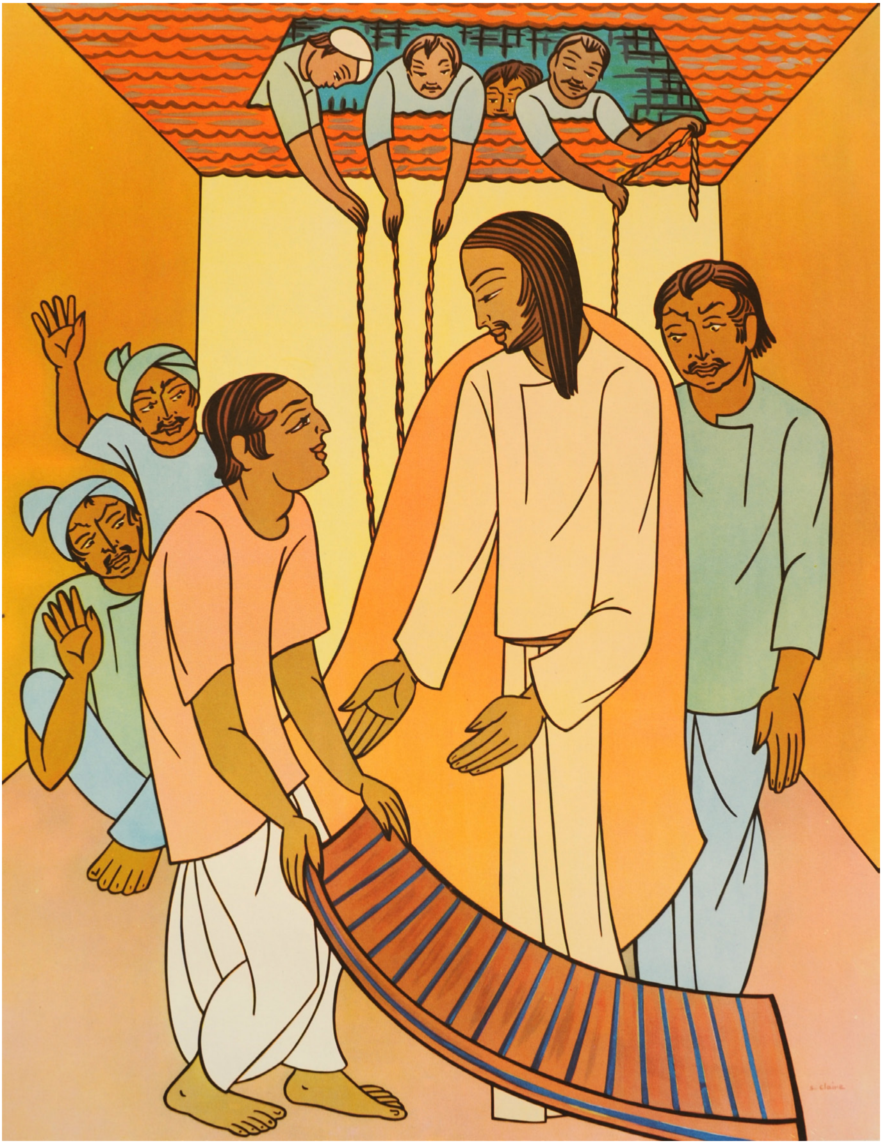

साथ खाना क्यों खाते हैं? यह अच्छी बात नहीं है।”[२] यीशु जी ने ऐसा सुनकर उनसे कहा, “जो बिमार नहीं हैं उनको डाक्टर की कोई जरूरत नहीं, लेकिन जो बिमार हैं उनको डाक्टर की जरूरत होती है, इसी तरह मैं धर्मियों को नहीं, लेकिन पापियों को बचाने के लिये आया हूं।”

लोग प्रभु यीशु से व्रत के बारे में पूछते है

(मरकुस २:१८-२२)

एक दिन गुरु योहन के शिष्यों और धर्म गुरुओं ने व्रत रखा था, लेकिन यीशु जी के शिष्यों ने व्रत नहीं रखा। यह देखकर कुछ लोग यीशु जी के पास आकर कहने लगे, “गुरु योहन के चेले और धर्म गुरु व्रत करते हैं, लेकिन तुम्हारे चेले व्रत क्यों नहीं करते?” यीशु जी ने उत्तर दिया, “जब तक दूल्हा बरातियों के साथ है, क्या बराती व्रत कर सकते हैं? बिल्कुल नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे खुश हैं। पर ऐसा दिन आयेगा जब कि दूल्हा बरातियों से अलग किया जाऐगा। उस दिन वे व्रत करेंगे क्योंकि वे दु:खी होंगे।”

यीशु जी इसके बारे में उदाहरण देकर समझाते हैं, “पुराने कपड़े में नये कपड़े का टुकडा नहीं लगाते हैं, क्योंकि नया कपड़ा धोने के बाद छोटा हो जाता है, जिससे पुराना कपड़ा और अधिक फट जाता है। और कोई भी आदमी नये अंगूर के रस को पुराने चमड़े के थैले में नहीं रखता है, क्योंकि अंगूर का रस बनने के समय फैलता है, जिस के कारण थैले को फाड़ देता है और अंगूर का रस और थैला दोनों बेकार हो जाते हैं। इसलिये हम नये अंगूर के रस को नये थैले में रखते हैं।”[३]

प्रभु यीशु विश्राम के दिन के भी प्रभु हैं

(मरकुस २:२३-२८, ३:१-६)

जब यीशु जी और उनके चेले विश्राम के दिन गेहूं के खेतों के रास्ते चल रहे थे, तब चेले गेहूं की बालों को तोड़कर खाने लगे। यह देखकर धर्म गुरुओं ने यीशु जी को डांटकर कहा, “तुम्हारे चेले फसल काट रहे हैं, जो विश्राम के दिन

---

२ चुंगी जमा करनेवाला आदमी रोमी सरकार के लिये चुंगी जमा करता था, और वे सरकार के द्वारा तय की रकम से अधिक रकम लोगों से जोर देकर जमा करते थे। इसलिये लोग उनको देखकर नफरत करते थे।

३ यीशु जी के कहने का अर्थ यह है कि जो उपदेश मैं देता हूं, वह पुराने रीति-रिवाजों के साथ मेल नहीं खाते क्योंकि वे बिल्कुल नये हैं।

करना मना है!" लेकिन यीशु जी ने उनसे कहा," विश्राम का दिन लोगों के लिये बना है, न की लोग विश्राम के दिन के लिये। मैं परमात्मा की ओर से आया हूं, इसलिए मैं विश्राम के दिन का भी प्रभु हूं।"

इसके बाद विश्राम के दिन यीशु जी सत्संग भवन में गये, जहां एक आदमी था जिसके हाथ काम नहीं कर रहा था। कुछ लोग यीशु जी पर दोष लगाना चाहते थे, इसलिए वे देख रहे थे कि वे उस आदमी को विश्राम दिन में ठीक करते हैं या नहीं। क्योंकि विश्राम के दिन काम करना मना था, और वे किसी को चंगा करना भी काम समझते थे। यीशु जी ने उस आदमी से कहा, "उठ, और बीच में खड़ा हो जा।" जैसा यीशु जी ने कहा, उसने वैसा ही किया। फिर यीशु जी ने लोगों से पूछा, "विश्राम के दिन में नियम के अनुसार क्या अच्छा है, किसी के लिये अच्छा करना या बुरा, किसी को बचाना या मारना?" और वे शर्म के मारे शान्त रहे।[४]

तब यीशु जी को यह देखकर बहुत दु:ख हुआ और उनको गुस्सा भी आ गया, क्योंकि लोग नहीं चाहते थे कि लकवा पड़ा हाथ वाला आदमी अच्छा हो जाये। और यीशु जी ने उस आदमी से कहा, "अपना हाथ सीधे कर।" जब उसने अपना हाथ सीधा करने की कोशिश की, तब उसका हाथ बिल्कुल अच्छा हो गया।

उस समय से वे धर्म गुरु यीशु जी को मारना चाहते थे और बाहर जाकर राज्यपाल हेरोदेस की दल के साथ मिलकर यीशु जी को मारने के लिये चाल-चलने लग गये।

लोग चारों ओर से प्रभु यीशु के पास आ रहे हैं

(मरकुस ३:७-१९)

फिर यीशु जी और उनके चेले गलील के समुद्र की ओर गये। उनके पीछे एक बड़ी भीड़ आ गयी, जिसमें इस देश के चारों दिशाओं के लोग थे, क्योंकि यह समाचार फैल चुका था कि यीशु जी बीमारों को अच्छा करते हैं। इसलिये बिमार लोग एक-दूसरे से आगे निकलते हुए यीशु जी के पास आ रहे थे, कि वे

---

४ विश्राम का दिन – जिस प्रकार से परमेश्वर ने छ: दिनों में सारे संसार की रचना करने के बाद सातवें दिन आराम किया, उन्होंने वैसा ही करने के लिये लोगों से भी कहा। लेकिन धर्म गुरुओं ने अपने कठिन नियम-कानूनों के द्वारा उसके असली अर्थ को बदलकर अपने मन मुताबिक कहानी बना दी। जिसको साफ करने के लिये यीशु ने यह उदाहरण दिया।

उनको छू कर अच्छे हो सकते हैं। भीड़ से दबने से बचने के लिये यीशु जी ने अपने शिष्यों से कहा, “एक नाव तैयार करो, जिसमें मैं बैठ सकूं।”

और भीड़ में ऐसे लोग भी थे जो भूत के वश में थे, और जब उन्होंने यीशु जी को देखा, तब वे डर के मारे उनके पैरों में गिरने लगे और जोर-जोर से कहने लगे, “आप परमात्मा के पुत्र हैं!” लेकिन यीशु जी ने उनको जोर देकर कहा, “लोगों को मत बताना कि मैं कौन हूं।”

फिर यीशु जी पहाड़ में गये और जिनको चाहा उनको अपने पास बुलाया। और उन्होंने उनमें से बारह चेले तैयार किये कि वे उनके साथ रहें और वे उनको उपदेश करने के लिये भेजे, और उन्होंने उनको भूत को निकालने का अधिकार भी दिया।

वे बारह शिष्यों में यह हैं शमौन जिसका नाम यीशु जी ने पारस रखा, उसका भाई अन्द्रियास, जबदी का बेटा जयकर और योहन, फिलीप, बरतोलोमी, लेवी चुंगी लेने वाला जिसका दुसरा नाम मती हैं, थोमा, हलफई का बेटा जयकर, तदै, शमौन जो रोमी सरकार के बिरोधी दल का एक सदस्य था, और यहूदा इस्करियोती जो बाद में यीशु जी को पकड़वाने वाला होगा।

प्रभु यीशु ने शैतान को हरा दिया है

(मरकुस ३:२०-३५)

इसके बाद यीशु जी कफरनहूम नगर के जिस घर में रह रहे थे, वहां आये और उनके चारों ओर बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गयी, जिससे उनको खाना खाने का समय भी नहीं मिल सका। यह सब सुनकर यीशु जी के रिश्तेदारों ने सोचा कि वह पागल हो गया, इसलिए हम उसे घर ले आते हैं।

उसी समय में येरुशलेम से आये धर्म गुरुओं ने ऐसा कहा, “इसमें तो सब से बड़ा शैतान है और यह उसी की ताकत से भूतों को निकालता है!” यह सुनकर यीशु जी ने धर्म गुरुओं को अपने पास बुलाकर कहा, “शैतान, शैतान को कैसे निकाल सकता है? अगर किसी देश के अंदर ही फूट पड़ जायेगी तब वह देश एक दिन नाश हो जाता है, और घर में फूट पड़ने पर वह परिवार नाश हो जाता है। वैसे ही अगर शैतान अपने साथियों का ही विद्रोह करे, तब वे सभी नाश

हो जायेंगे। कोई भी आदमी किसी भी ताकतवर आदमी के घर को, तब तक नहीं लूट सकता है जब तक कि वह घर के मालिक को पकड़कर बांद न ले।"[५]

यीशु जी ने फिर कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, कोई भी आदमी कितना ही पाप या परमात्मा की बुराई करेगा तो उनको मांफी मिल जायेगी। लेकिन अगर तुम कहते हो कि मैं यह काम ईश-आत्मा के द्वारा से नहीं लेकिन शैतान के द्वारा कर रहा हूं, तुम ईश-आत्मा की बुराई करते हो, और इसकी मांफी तुम को कभी नहीं मिलेगी।"

उसी समय में यीशु जी की मां और भाई-बहन ने बाहर से उनको बुलाने के लिये कोई आदमी अन्दर भेजा, क्योंकि यीशु जी के चारों ओर भीड़ थी। उसने यीशु जी से कहा, "देखो, तुम्हारी मां और तुम्हारे भाई-बहन बाहर हैं और वे तुम को बुला रहे हैं।"

यीशु जी ने उत्तर दिया, "कौन हैं मेरी मां और कौन हैं मेरे भाई-बहिन?" फिर उन्होंने अपने चारों ओर बैठे लोगों की ओर देखकर कहा, "यह हैं मेरे मां और मेरे भाई-बहिन! जो लोग परमात्मा की इच्छा को पूरा करते हैं, वे सच में मेरे भाई, मेरी बहन और मेरी मां हैं।"

प्रभु यीशु उपदेश देते है

(लूका ६:२०-३८, ४१-४२)

यीशु जी ने अपने शिष्यों को देखकर कहा,

"धन्य हो तुम जो गरीब हो, क्योंकि परमात्मा का राज्य तुम्हारा ही है।

धन्य हो तुम जो अभी भूखे हो, क्योंकि तुम संतुष्ट किये जाओगे।

धन्य हो तुम जो अभी रो रहे हो, क्योंकि तुम हंसोगे।

धन्य हो तुम जब मेरे वजह से लोग तुम्हारे साथ नफरत करें, तुम्हारा विरोध और बेईजती करें, और तुम को बदनाम करके निकाल दें। उस दिन खुश होना और आनंद मनाना, क्योंकि इसके बदले परम स्वर्ग में तुम को बड़ा ईनाम मिलेगा! उनके पुरखों ने भी परमात्मा के सेवकों के साथ ऐसा ही किया था।

---

५ यीशु जी के कहने का अर्थ था कि मैंने शैतान को हराकर बांद दिया है और इसलिए मैं भूत को भी निकाल सकता हूं।

पर हाय तुम्हारे लिये जो तुम अमीर हो, क्योंकि तुमने अपनी सुख-शांति पा ली है।

हाय तुम्हारे लिये जो संतुष्ट हो, क्योंकि तुम भूखे रहोगे।

हाय तुम्हारे लिये जो अभी हस रहे हो, क्योंकि तुम दुःखी होगे और रोते-रहोगे।

हाय तुम्हारे लिये जब लोग तुम्हारी बड़ाई करते हैं, क्योंकि उनके पूर्वज भी झूठे सेवकों के साथ ऐसा ही करते थे।

मैं तुमसे ऐसा कहता हूं कि अपने दुश्मनों के साथ भी प्रेम करो। जो तुम्हारे साथ दुश्मनी करते हैं, उनके लिये भलाई करो।

जो तुम को श्राप देते हैं उनको आशिर्वाद दो, जो तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनके लिये प्रार्थना करो।

जो तुम्हारे एक गाल में थप्पड़ मारता है, उसको दुसरा गाल भी दे दो।

जो तुम्हारा कोट लूटता है, उसे अपना कुरता भी दे दो। जो कोई भी तुमसे कुछ मांगता है, उसको वह दो। जो तुम्हारी चीज छीनता है, उससे वह वापिस नहीं मांगो।

जैसा व्यवहार तुम दूसरे से अपने लिये चाहते हो, वैसा ही व्यवहार तुम उनके लिये भी करो।

अगर तुम उनके साथ प्रेम करते हो जो तुम्हारे साथ प्रेम करते हैं, तब इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई है? क्योंकि पापी, जो प्रभु को नहीं मानते, वे भी अपने प्रेम करनेवालों के साथ प्रेम करते हैं। और अगर तुम उनकी भलाई करते हो जो तुम्हारी भलाई करते हैं, तब इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई है? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। अगर तुम उनको कर्जा देते हो जिनसे वापिस पाने की आशा रखते हो, तब इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई है? क्योंकि पापी भी पापियों को कर्जा देते हैं कि उनसे फिर उतना वापिस पा लें।

लेकिन तुम अपने दुश्मनों के साथ भी प्रेम करो, उनकी भलाई करो और वापिस पाने की आश नहीं रख कर कर्जा दो। तभी तुम्हारा ईनाम भी बड़ा होगा और तुम महान परमात्मा के संतान बन जाओगे, क्योंकि वे भी एहसान-फरामोस और दुष्टों में दया करते हैं।

दयावन्त बनो जैसे परमात्मा, जो परम स्वर्ग में तुम्हारे पिता हैं, दयावन्त हैं।

दोष न लगाओ, तब तुम में भी दोष न लगाया जाऐगा। किसी के खिलाफ फैसला न करो, तब तुम्हारे खिलाफ भी फैसला न किया जाऐगा। माफ करोगे, तब तुम को भी माफ किया जाऐगा।"

दोगे, तब तुम को भी दिया जाऐगा। दबा-दबा के और पूरी-पूरी नाप से तुम्हारे गोद में डाला जाऐगा, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जाऐगा।"

जब तुम को अपने आँख के लट्ठे का पता नहीं है, तब तुम अपने भाई के आँख के तिनके को कैसे देख सकते हो? जब तुम को अपने आँख का लट्ठा नहीं दिखायी देता है, तब तुम कैसे अपने भाई से कह सकते हो, "ला, मैं तेरे आँख के तिनके को निकाल देता हूं?" हे कपटी, पहले अपने आँख के लट्ठे को निकाल, तब तू अपने भाई के तिनके को अच्छी से निकाल सकेगा!"

अनाज के बीज की तुलना परमात्मा के वचन के साथ

(मरकुस ४:१-२०))

इसके बाद यीशु जी गलील के समुद्र के किनारे में प्रचार कर रहे थे और उनके साथ इतनी बड़ी भीड़ जमा हो गयी कि उनको प्रचार करने के लिये एक नाव में बैठना पड़ा। यीशु जी ने उनको किस्से-किस्सों में बहुत बातों के बारे में समझाया। उन्होंने कहा," सुनो, एक किसान बीज बोने के लिये गया। बोते-बोते कुछ बीज रास्ते के किनारे में पड़े, और चिड़ियों ने आकर उनको चुग लिया। कुछ बीज पथरीली भूमि में पड़े और वे मिट्टी की कमी के कारण जल्दी उग गये। लेकिन तेज धूप से सम्भलने से पहले सूख पड़े क्योंकि उनकी जड़ गहरी मिट्टी में नहीं थी। कुछ बीज झाड़ियों के बीच पड़े और झाड़ियों ने उनको दबा दिया। इसलिये वे फलवन्त नहीं हो सके। लेकिन कुछ बीज अच्छी भूमि में पड़े और वे उग कर इतने फलवन्त हुए कि कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाये। इस बात को सुनो और सीख लो।"

जब यीशु जी एकांत में थे तब उनके बारह शिष्यों ने उनसे इस किस्से के बारे में पूछा। तब यीशु जी ने कहा, "परमात्मा के राज्य के भेद की समझ तुम्हे दी गई है। पर जो आदमी मुझ पर विश्वास नहीं करता उनके लिये में किस्सों

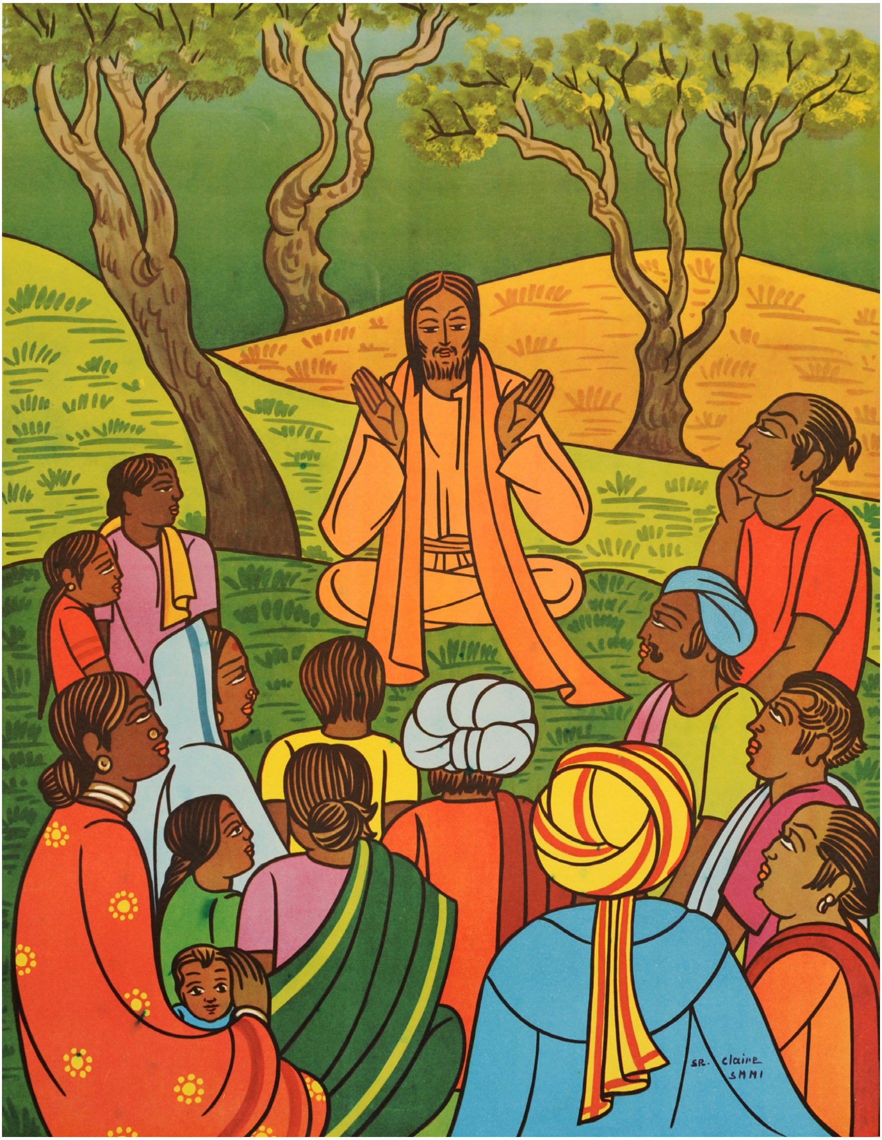
SR. claire
SMMI

के जरिये बात करता हूं। जैसा परमात्मा ने अपने सेवक यशायाह के जरिये से कह रखा है," जब उनको मेरे काम दिखाये जाते, तब वे नहीं देखते और जब उनको मेरी बात सुनाई जाती है, वे नहीं सुनते। नहीं तो ये पश्चाताप करते और मैं उनको ठीक कर देता।""

यीशु जी ने उनसे फिर कहा, "अगर तुम इस किस्से का अर्थ नहीं समझते तब और किस्सों का अर्थ कैसे समझोगे? फिर भी मैं तुम को समझाता हूं की बीज परमात्मा का वचन है, और बीज बोने वाला परमात्मा का वचन सुनाने वाला है। जैसे कुछ बीज रास्ते के किनारे में पड़े और चिड़ियों ने आकर उनको खा लिया, वैसे ही कुछ लोग वचन सुनते हैं, लेकिन शैतान आकर उनके मन से वचन निकाल ले जाता है। और जैसे कुछ बीज पथरीली भूमि में पड़े, वैसे ही कुछ लोग वचन सुनकर खुशी-खुशी उसे मानते हैं, लेकिन जड़ अच्छी से नहीं पकड़ते। वे कुछ समय तक विश्वास करते हैं लेकिन दु:ख मुसीबत के आने पर फेल हो जाते है। फिर जैसे कुछ बीज झाड़ियों के बीच पड़े, कुछ लोग वचन सुनते हैं लेकिन आगे जाकर वे चिन्ता और अपने धन-दौलत और जिन्दगी के ऐश अराम में फस जाते हैं और उनके फल अच्छी से नहीं पकते।

लेकिन जैसे कुछ बीज अच्छी भूमि में पड़े, वैसे ही कुछ लोग वचन ध्यान से सुनकर हमेशा अपने अन्दर समभाल कर रखते हैं और फल लाते हैं - कोई तीस, कोई साठ और कोई सौ गुणा।"

प्रभु यीशु अलग-अलग किस्सा सुना रहे हैं

(मरकुस ४:२१-३४)

फिर यीशु जी ने उनसे कहा, "लोग इसलिये बत्ती नहीं जलाते कि उसे जलाकर चारपाई के नीचे रखें या किसी भी बरतन से ढक दे, बल्कि इसलिये जलाते हैं कि उसे ऊंचे स्थान में रखें जिससे सारे अन्दर में उजाला हो जाये। सभी जो अभी छिपा-छिपाकर रखा है, वह समय आने पर सामने आयेगा। जो तुम अभी नहीं समझ रहे हो, समय आने पर समझ जाओगे। इसे सुनो और सीख लो।

तुम परमात्मा की बात को जितना भी सुनते हो, उसे ध्यान से सुनो और समझो, क्योंकि अगर तुम समझने की कोशिश करोगे तब तुमको और अधिक समझने की शुक्ति दी जायेगी। क्योंकि जिसके पास समझने की शुक्ति है, उसको और मिलेगी, और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले ली जायेगी, जो उसके पास है।"

फिर यीशु जी ने लोगों से कहा, “मैं तुम को परमात्मा के राज्य के बारे में एक दूसरा किस्सा सुनाता हूं। परमात्मा का राज्य उस आदमी के तरह है जो भूमि में बीज बोता है। वह रात-दिन सोता-उठता रहता है और दूसरी ओर भूमि में बीज उगता है। वह इसके बारे में कुछ नहीं जानता कि यह सब कैसे हो रहा है। भूमि अपने आप फसल पैदा करती है, पहले अंकुर फिर बाल और फिर जाकर बाल में पक्के बीज। और तब वह आदमी फसल को काटने लग जाता है, क्योंकि काटने का समय हो गया है।”

फिर यीशु जी ने कहा, “परमात्मा का राज्य एक राई के बीज की तरह है। जब उसे धरती में बोया जाता है, तब वह सारी धरती में सब से छोटा बीज होता है। पर बोये जाने के बाद जब वह उगता है, तब सब से बड़ा पौधा हो जाता है और उसकी टहनिया इतनी बड़ी हो जाती हैं कि उसमें आकाश के पक्षी अपना घोंसला बना सकते हैं।”

यीशु जी ऐसे ही बहुत किस्सों के जरिये से लोगों को उनकी समझ के हिसाब से परमात्मा के वचन सुनाते थे। वे बिना किस्सों के जरिये किसी से कुछ नहीं कहते थे पर एकांत में अपने शिष्यों को सब किस्सों के अर्थ अच्छी तरह समझा देते थे।

प्रभु यीशु के कहने पर आँधी-तूफान थम गया

(मरकुस ४:३५-४१)

उस दिन शाम के समय जब वे समुद्र के किनारे में थे, तब यीशु जी ने अपने शिष्यों से कहा, “आओ, हम समुद्र के पार चलते हैं।” और भीड़ छोड़ कर शिष्य यीशु जी को नाव में ले गये। दूसरी नावें भी उनके साथ जाती रही।

तब समुद्र में एक जोरदार आँधी तूफान उठी और लहरें इतनी जोर से नाव में टकराईं कि वे पानी से भरने लगी।

उस समय यीशु जी नाव के पीछे के भाग में तकिया लगाकर सोये थे। शिष्यों ने उनको उठाकर कहा, “हम डूब रहे हैं, आपको हमारी कुछ चिन्ता नहीं है?” यीशु जी ने उठकर हवा को डाँटा और समुद्र से कहा, “शान्त हो जा, थम जा!” और हवा थम गई।

फिर उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, “तुम क्यों डर रहे हो? क्या तुमको अब तक विश्वास नहीं है?”

शिष्यों में बहुत डर छा गया और वे आपस में ऐसा कहने लगे, "हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा है कि ये कौन है, कि हवा और समुद्र भी इनका कहना मानते हैं!"

प्रभु यीशु भूतों की सेना को भगा रहे हैं

(मरकुस ५:१-२०)

यीशु जी अपने शिष्यों के साथ गलील के समुद्र के उस पार गिरासेनियों नाम के इलाके में आये। यीशु जी जैसे ही नाव से जमीन में उतरे, एक भूत लगा आदमी कब्रिस्तान से सीधे उनके पास आया। वे कब्रिस्तान के आस-पास रहता था और उसको कोई जंजीरों से भी नहीं बांद सकता था। क्योंकि उसको बार-बार जंजीरों से और बेडियों से बांधा था, पर उसने जंजीरों को तोड़ दिया और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े बना दिये। उस पर कोई भी काबू नहीं कर सकता था। वह रात दिन लगातार कब्रिस्तान और आस-पास के पहाडों में चिल्लाता रहता था और पत्थरों से अपने को मार-मारकर घायल करता था। वह यीशु जी को देखकर दूर से दौड़ते आया। तब यीशु जी ने भूत से कहा, "भूत, तू इसे छोड़कर चले जा!" उस आदमी ने उनके पैरों में गिरकर जोर से कहा, "हे यीशु, परमात्मा के पुत्र, मेरे साथ तुम्हारो क्या काम, आप को परमात्मा की कसम है कि आप हमको परेशान मत करना!" लेकिन यीशु जी ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उस भूत ने उत्तर दिया, "हम बहुत है, हमारा नाम सेना है।" और वे यीशु जी से विनती करने लगे कि हमको इस प्रदेश से बाहर मत फेंकना।

उस समय वहां पहाड़ में सुअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। भूतों ने यह कहकर यीशु जी से विनती की कि हमको उन सुअरों में भेज दो। यीशु जी ने उनको यह हूक्म दे दिया। तब सभी भूत उस आदमी के अन्दर से निकलकर सुअरों के अन्दर गई, और वह सुअरों का झुण्ड दौड़ा और समुद्र में गिरकर मर गया। वे लगभग दो हजार सुअर थे।

तब सुअरों के चरवाहे भागकर नगर और गाँवों में गये और यह खबर फैला दी। और सब लोग यह देखने के लिये आये कि क्या बात है। वे यीशु जी के पास आये और इसे देखकर बहुत डर पड़े कि वह भूत लगा आदमी बिल्कुल ठीक-ठाक है और कपड़े पहनकर अच्छे से बैठा है। जिन्होने यह सब अपने सामने होते देखा उन्होंने औरों को भी यह बताया कि भूत लगे आदमी के साथ क्या हुआ और सुअरों पर क्या बीती।

तब वहां रहने वाले लोग यीशु जी से विनती करने लगे कि आप हमारे प्रदेश से चले जाइये। (यह सोचकर, कि अगर वह यीशु जी यहां रहेंगे, हमारा कुछ और नुकसान होगा!)

जब यीशु जी नाव में चढ़ने लगे, तब उस आदमी ने जिसमें पहले भूत थी, विनती की, "मुझे अपने साथ आने दो!" लेकिन यीशु जी ने उससे कहा, "अपने घर को जा और उनको बता कि परमात्मा ने तेरे लिये कितना अच्छा किया और किस तरीके से तुझ पर कृपा हुई है।"

यह सुनकर वह जाते रहा और सारे इलाके में यह बताने लगा कि यीशु जी ने उसके लिये कितना बड़ा काम किया। यह सुनकर सब लोग चकित रह गये।

एक मरी लड़की का जीवित होना

(मरकुस ५:२१-४३)

इसके बाद जब यीशु जी नाव से समुद्र के पार दुबारा पहुंचे, तब उनके पास एक बड़ी भीड़ जमा हो गयी। इतने में सत्संग भवन का एक प्रधान आया जिसका नाम याईर था। वह यीशु जी को देखकर उनके पाँव में पड़ गया, और यह कहकर विनती करने लगा, "मेरी बारह साल की लड़की मरने वाली है! दया करके मेरे साथ चलिऐ, और उस पर हाथ रख दो कि वह अच्छी हो जाये और जीवित रह सके!" और यीशु जी उसके साथ चले गये।

उनके साथ इतनी बड़ी भीड़ थी कि लोग उनके ऊपर में गिरे जा रहे थे। और वहां एक औरत भी थी जिसको बारह वर्ष से लहू बहने का रोग लगा था। वह इलाज के लिये कितने प्रकार के वैद्यों के पास भी गई पर कुछ अन्तर नहीं हुआ। इसके अलावा उसका पूरा धन-दौलत भी बर्बाद हो गया। उसने यीशु जी के बारे में सुना था कि वे बीमारों को अच्छा करते हैं। इसलिये वह भी सोचती थी कि अगर मैं उनके कपड़े को भी छू लूँगी, तब अच्छी हो जाउंगी। इसलिये उसने भीड़ के बीच में चुपचाप आकर यीशु जी के कपड़े छू लिये। और उसी समय से उसका लहू बहना बन्द हो गया और उसने महसूस किया मैं इस रोग से अच्छी हो गयी हूं।

यीशु जी ने उसी समय जान लिया कि मेरे अन्दर से शुक्ति निकली है। उन्होंने रुककर कहा, "मुझे किसने छुआ?" उनके शिष्यों ने "कहा, तुम खुद देख रहे

हो कि भीड़ चारों ओर से तुम्हारे ऊपर में उमड़ रही है। तब भी आप पूछ रहे हो की मुझे किसने छुआ!" लेकिन इसका पता करने के लिये कि मुझे छूनेवाला कौन था, यीशु जी अपने चारों ओर देखने लगे। तब वह औरत डरते-थरथराते यीशु जी के पास आकर, उनके पाँव में पड़ी, और उसने उनको सब सच-सच बता दिया। यीशु जी ने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा किया। शांति से जा और अपने रोग को भूल जा!"[६]

इसी समय याईर के घर से कुछ लोग आये और उन्होंने याईर से कहा, "तुम्हारी लड़की मर गई। अब गुरु को कष्ट देने की कोई जरूरत नहीं है।" लेकिन यीशु जी ने उनकी बात सुनकर याईर से कहा, "नहीं डरो, मुझमें विश्वास रखो।" तब यीशु जी ने पारस, जयकर और योहन जो उनके शिष्य थे और किसी को भी अपने साथ नहीं आने दिया।

जब वे याईर के घर के बाहर पहुंचे, तब यीशु जी ने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा। तब उन्होंने उनसे कहा, "तुम क्यों इतना हल्ला-गुल्ला कर रहे हो, यह लड़की मरी नहीं है, पर सो रही है।" यह सुनकर लोग उनकी हंसी उड़ाने लगे, पर उन्होंने सब को बाहर भेज दिया और सिर्फ लड़की के माता-पिता को और अपने तीन शिष्यों को लेकर उस कमरे में गये जहां लड़की को रखा था। और यीशु जी ने लड़की का हाथ पकड़कर कहा, "लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ!" तब लड़की तुरन्त जीवित होकर चलने फिरने लगी। और यह देखकर लोग बहुत अधिक चौंक पड़े।

और यीशु जी ने उनको जोर देकर कहा, "जो यहाँ हुआ, इसके बारे में तुम किसी से कुछ मत कहना। अभी इस लड़की को खाना खिलाओ।"

प्रभु यीशु को उनके गाँव वालों ने नहीं अपनाया

(मरकुस ६:१-६)

वहां से जाने के बाद यीशु जी अपने शिष्यों के साथ नासरत नगर में आये, जहां वे बचपन से रहे थे।

---

६ यहूदियों के नियमों के अनुसार एक लहू बहने वाली औरत अशुद्ध होती थी, और जो भी उसको छुता था, वह भी अशुद्ध हो जाता था। लेकिन यीशु दूसरे धर्म गुरुओं की तरह नहीं थे, इसलिऐ वे नराज नहीं हुऐ कि इसने मुझे अशुद्ध कर दिया है। जरुर वह औरत यीशु के पास आने से डर रही होगी, लेकिन यीशु ने केवल उसको अच्छा ही नहीं किया बल्की उसके डर को भी खत्म कर दिया।

वे विश्राम के दिन सत्संग भवन में उपदेश देने लगे। बहुत लोग उनके उपदेश सुनने के बाद चकित होकर कहने लगे, "यह तो मर्म का पुत्र है जो लकड़ी का कारीगर था, और इसके भाई जयकर, जोश, यहूदा और शमौन हैं, और इसकी बहनें हमारे गाँव में रहती हैं! इसे इतना ज्ञान कहां से प्राप्त हुआ? और वह कौन सी शुक्ति है जिससे यह, सब अद्‌भुत काम करता है?" इसलिये लोग भ्रम में पड़ गये।

यह देखकर यीशु जी ने उनसे कहा, "परमात्मा के सेवकों को बाहर बहुत आदर-सम्मान मिलता है, लेकिन अपने घर, खानदान और नगर में उनकी पूछ नहीं होती है।" यीशु जी ने वहां उनके अविश्वास के कारण से अधिक सामर्थ के काम नहीं कर सके, केवल कुछ बीमारों पर अपना हाथ रख कर अच्छा किया। वे चकित हुए कि वे लोग उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे।

शिष्य प्रचार के लिये जाते हैं

(मरकुस ६:७-१३)

यीशु जी उपदेश देते-देते गाँव-गाँव में घूम रहे थे। और उन्होंने अपने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाकर उनको भूतों को निकालने का अधिकार दिया, और यीशु जी ने उनको दो-दो करके प्रचार करने को भेजने लगे। यीशु जी ने कहा, "रास्ते के लिये लाठी के अलावा कुछ नहीं ले जाना, ना रोटी, ना झोला और ना बटुए में पैसे। तुम पाँव में जूते पहन सकते हो पर दूसरा जोड़ा कपडा नहीं ले जा सकते हो। जो लोग तुमको अपने घर में बुलायें, उस स्थान से जाने तक वहीं रहना। जहां के लोग तुम्हारा न स्वागत करते हैं, न बात सुनते हैं, तब उस स्थान से जाने पर अपने पाँव की धूल तक यह दिखाने के लिये झाड़ लेना कि परमात्मा पक्का उनको सजा देंगे।"

और वे नगर नगरों में जाकर लोगों को अधर्म का रास्ता छोड़कर अच्छे रास्ते को अपनाने के लिये बता रहे थे। और उन्होंने बहुत लोगों में से भूतों को निकाला और बिमार लोगों के सिर में तेल रख कर उनको अच्छा किया।[७]

---

७ धर्म-ग्रंथ में तेल अधिकतर परमेश्वर की उपस्थिति को और उनके आशीष का एक चिन्ह है।

SR. claire
SMMI

प्रभु यीशु पाँच हजार लोगों को खाना खिलाते हैं

(मरकुस ६:३०-४४)

फिर यीशु जी के शिष्य गाँवों में प्रचार करने के बाद यीशु जी के पास आये। और वे यीशु जी को बताने लगे कि हमने क्या क्या किया और सीखा।

लेकिन वहां आने-जाने वालों की इतनी भीड़ जमा हो रही थी कि उनको खाना खाने का मौका भी नहीं मिल रहा था। यह देखकर यीशु जी ने अपने शिष्यों से कहा, “इस भीड़-भाड़ वाली जगह से कहीं शान्त जगह में चलो, वहां आराम करोगे।” इसलिये वे नाव में बैठकर सुनसान जगह चले गये।

लेकिन बहुत लोगों ने उनको जाते देखा। तब वे समझ गये कि वे कहां जा रहे हैं, तब और लोग दौड़कर उनसे पहले वहां भी पहुंच गये।

यीशु जी ने नाव से उतरते ही वह बड़ी भीड़ फिर देखी, और उन लोगों को देखकर यीशु जी को उनमें दया आ गयी, क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ जैसे थे। इसलिये उन्होंने उनको बहुत बाते बताइ।

जब शाम होने लगी, यीशु जी के शिष्यों ने उनके पास आकर कहा, “यह जगह बहुत सुनसान है। अंधेरा भी होने लगा है। अभी आप इन लोगों से कह दो कि ये आस-पास के गाँवों में जाकर अपने लिये थोड़ा खाना मोल ले लें।”

यह बात सुनकर यीशु जी ने उनसे कहा, “तुम इन लोगों को खाना दो!” तब शिष्यों ने यीशु जी से कहा, “कहां से खिलाएँ, हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं।” यीशु जी ने शिष्यों से पूछा, “लोगों के पास कितनी रोटी हैं? जाकर मालुम करो।” उन्होंने पूछकर बताया, “पाँच रोटी और दो मछली हैं।”

फिर यीशु जी ने शिष्यों को सब को बैठाने की आज्ञा दी। लोग सौ-सौ और पचास-पचास के पंक्ति-पुंक्ति बनाकर बैठ गये। यीशु जी ने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ पकडी, और स्वर्ग की ओर देखकर आशीष मांगी। उसके बाद उन्होंने रोटी और मछलियाँ को तोड़ा और शिष्यों को देते रहे, कि वे लोगों को दें। इस प्रकार उन्होनें पाँच हजार से अधिक लोगों को खाना खिलाया। और उन सब ने पेट भर के खाना खाया, और उसके बाद फिर भी शिष्यों ने रोटियाँ और मछलियाँ के बचे टुकड़ों से भरे बारह टोकरी सम्भाले।

प्रभु यीशु पानी के ऊपर में चल रहे हैं

(मरकुस ६:४५-५६)

उसके बाद यीशु जी ने अपने शिष्यों को नाव में बैठाकर बैतसैदा नगर जाने के लिये कहा, जो गलील समुद्र के दूसरे पार था। और भीड़ को अच्छे से विदा करने के बाद वे प्रार्थना करने के लिये पहाड़ में जाते रहे। रात खुलते समय शिष्यों को नाव चलानी भारी पड़ रही थी क्योंकी आँधी तूफान बहुत तेज था। तब यीशु जी पानी के ऊपर में उनके साथ चलने लगे। लेकिन शिष्यों ने उनको पानी में चलते देखकर सोचा कि यह कोई भूत है! और तब वह चिल्लाने लगे, तब यीशु जी ने उनसे बात की और कहा, “हिम्मत करो, डरो मत, मैं हूं!”

तब वे उनके साथ नाव में गये और आँधी तूफान रुक गई। यह देखकर शिष्य बहुत चकित थे कि उन्होंने क्या किया। वे अच्छे से समझ नहीं पाये कि वे कितने सामर्थी हैं।

इसके बाद यीशु जी और शिष्य समुद्र के पार गिनेसरेत नगर में पहुंचे। जब यीशु जी नाव से बाहर आये, तब वहां के लोगों ने उनको पहचान लिया। और वे चारों तरफ से दौड़कर अपने बीमारों को चारपाई में रखकर यीशु जी के पास लाये। और यीशु जी जहां भी जाते, लोग अपने-अपने बीमारों को बाजार में रखते थे और उनसे विनती करते थे कि अपने कपड़े के एक कोने को छूने दें। और जिन्होने उनको छुआ, वे चंगे हो गये।

प्रभु यीशु शुद्ध और अशुद्ध के बारे में समझा रहे हैं

(मरकुस ७:१-२३)

यहूदी धर्म गुरु और सब दूसरे यहूदी भी तब तक खाना नहीं खाते थे, जब तक कि वे एक विशेष तरीके से अपने हाथ नहीं धोते थे। लेकिन जब कुछ धर्म गुरुओं ने यीशु जी के शिष्यों को बिना उस तरीके से हाथ धोये खाना खाते देखा, तब उन्होंने यीशु जी से पूछा, “तुम्हारे शिष्य पूर्वजों की रीति रिवाजों का पालन क्यों नहीं करते? वे अपना खाना बिना हाथ धोये क्यों खाते हैं?”

यीशु जी ने उत्तर दिया, “परमात्मा ने अपने सेवक यशायाह के जरिये से तुम्हारे जैसे कपटी लोगों के बारे में कहा था,

"यह मेरा आदर सिर्फ मुंह से करते हैं और इनके मन मुझ से हमेशा दूर है।

उनकी अराधना करना व्यर्थ है क्योंकि वे लोगों के बनाये नियमों को ऐसे सिखाते हैं जैसे कि वे मेरे नियम हों।"

तुम भी लोगों के बनाये रीति रिवाजों का पालन करते हो और परमात्मा के हूक्म को टाल देते हो!"

फिर यीशु जी ने उनसे कहा, "तुम अपने नियमों को बनाने के लिये परमात्मा के हूक्म को कितनी चालाकी से छोड़ देते हो। क्योंकि परमात्मा ने अपने सेवक मोशेश के द्वारा हमको यह आज्ञा दी कि तुम अपने माता-पिता का आदर करो और यह भी कि जो अपने माता-पिता को बुरा-भला कहता है, वह पक्का मार डाला जाऐगा। लेकिन तुम अपने हिसाब से इस आज्ञा के बिल्कुल उल्टा करते हो। जैसा अगर कोई आदमी अपने माता-पिता से कहता है कि मैं तुम्हारी कुछ मद्द नहीं करूंगा, क्योंकि जो भी मैं तुम को देने वाला था, वह परमात्मा को दुंगा, तब तुम यह अच्छा मानते हो! और यह कर के तुम अपने बनाये रीति-रिवाजों से परमात्मा के वचन को टाल देते हो। ऐसा ही तुम बहुत बातों को करते रहते हो।"

यीशु जी ने फिर सब लोगों को अपने पास बुलाकर कहा, "तुम सब मेरी बातों को सुनकर समझ लो। कोई भी खाना जो आदमी खाता है, या उसका कोई भी खाना खाने का तरीका, उसको अशुद्ध नहीं करता, लेकिन जो आदमी में से बाहर आता है, वही उसको अशुद्ध करता है। इसे सुनो और सीख लो।"

फिर यीशु जी लोगों को छोड़ कर उस घर में गये जहां वे रह रहे थे। तब उनके शिष्यों ने इन बातों का अर्थ पूछा। तब यीशु जी ने कहा, "क्या तुम भी इतने अनजान हो, क्या तुम इतना नहीं समझते कि जो भी खाना बाहर से आदमी के अन्दर जाता है, वह आदमी को अशुद्ध नहीं कर सकता है? क्योंकि वह लोगों के मन में नहीं बल्कि उनके पेट में जाता है और सनडांस से बाहर आ जाता है।" ऐसा कहकर यीशु जी ने सब खाने वाले चीजों को सही ठहराया।

यीशु जी ने फिर कहा, "आदमी के मन से जो बुरी बात-विचार बाहर आता है, वही उसको अशुद्ध करता है। क्योंकि लोगों के मन के अन्दर से बुरे विचार निकलते है जैसे कुकर्म, चोरी, खून, कामुकता, लालच, शत्रुता, धोखेबाजी,

दुष्टता, जलन, बुराई, घमण्ड, अधर्म, मूर्खता। ये सब बुरी-बुरी बातें लोगों के अन्दर से निकलते हैं और वही उनको अशुद्ध करते हैं।"

एक दूसरे देश की औरत प्रभु यीशु में विश्वास करती है

(मरकुस ७:२४-३०)

तब यीशु जी उस स्वान को छोड़कर सूर नगर के आस-पास के जगह की ओर चले गये। वहां वह एक घर में गये, और वह नहीं चाहते थे कि किसी को भी उनके आने का पता चले, लेकिन वे अपने को छिपा नहीं सके। एक यूनानी औरत जिसकी लड़की में भूत था। वह यीशु जी के बारे में सुनकर उनके पास आई और उनके पाँवों में गिर गईं। और बिनती करने लगी, कि मेरी लड़की में से भुत को निकाल दीजिऐ।

यीशु जी ने उसका विश्वास परखने के लिये उससे कहा, "तू तो यहुदीन नहीं, तेरी मदद करना तो वैसा हो जेसे हि एक पिता अपने बच्चों के खाने को बच्चों को देने से पहले कुत्तों को दे दें।"

तब औरत ने उसको उत्तर दिया, "ठीक है प्रभु, लेकिन कुत्ते भी बच्चों के जूठे-पीठे को खा लेते हैं!" यीशु जी ने उससे कहा, "इस उत्तर के कारण तू बे फिकर होकर अपने घर जा, तेरी लड़की ठीक हो गयी है।" और जब वह औरत अपने घर लौटी, तब उसने देखा कि उसकी लड़की चुपचाप अपने चारपाई में सो रही है और भूत भी निकल गया है।

प्रभु यीशु एक बहरे आदमी को अच्छा करते हैं

(मरकुस ७:३१-३७)

फिर यीशु जी वहां से चलकर दिकापुलिस के गाँवों में गये जो गलील के समुद्र के पार थे। वहां यीशु जी के पास आदमी एक बिमार को लाये जो कानों से सुन नहीं सकता था और अच्छे से बोल भी नहीं सकता था। और उन्होंने यीशु जी से विनती की, "आप इस पर हाथ रख दें तब यह ठीक हो सकता है।"

उसके बाद यीशु जी उस आदमी को भीड़ से अलग ले गये और उसके कान में अपनी अंगलियाँ डाली और उसकी जीभ में अपना थूक लगाया। और आकाश

की ओर देखकर प्रार्थना करने के बाद उन्होंने कहा, “खुल जा!” और उस समय से वह आदमी कांनों से सुनने और अच्छे से बोलने लगा।

यह सब देखकर लोग बहुत चकित हो गये और खुशी से कहने लगे, “जो ये कर रहे हैं, ठीक कर रहे हैं! यह तो जो बोल नहीं सकता है उनको बोलने की शुक्ति देते हैं, और जो कांन नहीं सुनते, वे सुनने लग जाते हैं!”

और यीशु जी ने लोगों से कहा, “इस बात के बारे में तुम किसी से कुछ मत कहना।” लेकिन जितना उन्होंने मना किया, वे उतना उनके बारे में अधिक प्रचार करने लगे।

प्रभु यीशु चार हजार लोगों को खाना खिलाते हैं

(मरकुस ८:१-१०)

कुछ दिन के बाद फिर यीशु जी के सामने एक बहुत बड़ी. भीड़ जमा हुई। उन लोगों के पास में खाने के लिये कुछ नहीं था। तब यीशु जी ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा”, मुझे इन लोगों को देखकर दया आती है। ये तीन दिन से मेरे साथ हैं, और इनके पास कुछ भी खाने को नहीं है। अगर मैं इन लोगों को भूखा घर भेज दूं, तब इनको चलते-चलते रास्ते में चक्कर आ जायेंगे, क्योंकि कोई-कोई बहुत दूर से आये हैं।” तब उनके शिष्यों ने कहा, “इस खाली स्वान में इतने लोगों के खाने का इंतजाम कैसे हो सकता है?” लेकिन यीशु जी ने शिष्यों से पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं?” उन्होंने कहा, “सात।”

फिर यीशु जी ने लोगों को बैठाने की आज्ञा दी और रोटियां लेकर उन्होंने परमात्मा को धन्यवाद दिया। तब उन्होंने रोटी तोड़कर अपने शिष्यों को देते रहे और शिष्य लोगों को देते गये। उनके पास थोड़ी छोटी मछली भी थी। यीशु जी ने परमात्मा को धन्यवाद देकर कहा, “यह मछलियां भी बांट दो।” और सबने पेट भर खाया। उसके बाद उन्होंने बची रोटियों के टुकुड़ों से सात टोकरे भरकर उठाए। खाना खाने वाले लोग चार हजार से अधिक थे। फिर यीशु जी ने उनको विदा किया।

और इसके बाद यीशु जी नाव में बैठकर अपने शिष्यों के साथ दलमनूथा स्वान में चले गये।

धर्म गुरु प्रभु यीशु की परीक्षा लेते है

(मरकुस ८:११-२१, मती १६:१२)

तब धर्म गुरु आकर यीशु जी के साथ बहस करने लगे। यीशु जी की परीक्षा लेने के विचार से उन्होंने कहा, "तुम हमारे लिये कोई भी चमत्कार का काम करो जिससे हम जान सकें कि तुम परमात्मा के पुत्र हो या नहीं हो!" यीशु जी ने लम्बी सांस लेकर कहा, "तुम चिन्ह क्यों मांग रहे हो? मैं सच कहता हूं, कि कोई भी चिन्ह नहीं दुंगा।"

यीशु जी धर्म गुरुओं को छोड़कर शिष्यों के साथ समुद्र के उस पार के किनारे में चले गये। शिष्य नाव में खाना ले जाना भूल गये थे और उनके पास एक रोटी के अलावा और कुछ नहीं था। यीशु जी ने उनको सावधान करने के लिये कहा, "धर्म गुरुओं की खमीरी रोटी को देखकर होशियार रहो।"

शिष्यों ने यह सोचा कि हमारे पास खाना नहीं है, इसलिये यह ऐसा कह रहे हैं।

यीशु जी ने उनकी बात सुनी और निराश होकर उनसे कहा, "तुम्हारे पास रोटी नहीं है कहकर तुम परेशान क्यों हो रहे हो? क्या तुम अभी तक नहीं समझे, क्या तुम्हारे पास बुद्धी नहीं है? क्या तुम आँखे होने के बाद भी देख नहीं सकते है, और कांन होते हुऐ भी नहीं सुनते हो? क्या तुमको याद नहीं है कि जब मैंने पाँच हजार लोगों के लिये पाँच रोटियां के टुकड़े करे, तब तुमने कितनी बची टोकरे जमा करे?" उन्होंने कहा, "बारह टोकरी।" "और जब मैने चार हजार के लिये सात रोटी के टुकड़े करे, तब तुमने रोटी के टुकड़ों से भरे कितने टोकरे उठाये?" उन्होंने कहा, "सात।" तब यीशु जी ने उनसे कहा, "तुम अभी भी नहीं समझेझ?"

तब शिष्यों को समझ आया कि यीशु जी ने उनको खमीरी रोटी से नहीं बल्कि धर्म गुरुओं के सीख से सावधान रहने के लिये कहा।

प्रभु यीशु एक अंधे को चंगा करते हैं

(मरकुस ८:२२:३०)

फिर यीशु जी और उनके शिष्य बैतसैदा गाँव में पहुंचे। तब कुछ लोग एक अन्धे आदमी को यीशु जी के पास लाये और उनसे विनती करने लगे कि आप इसे छूकर अच्छा कर दीजिये।

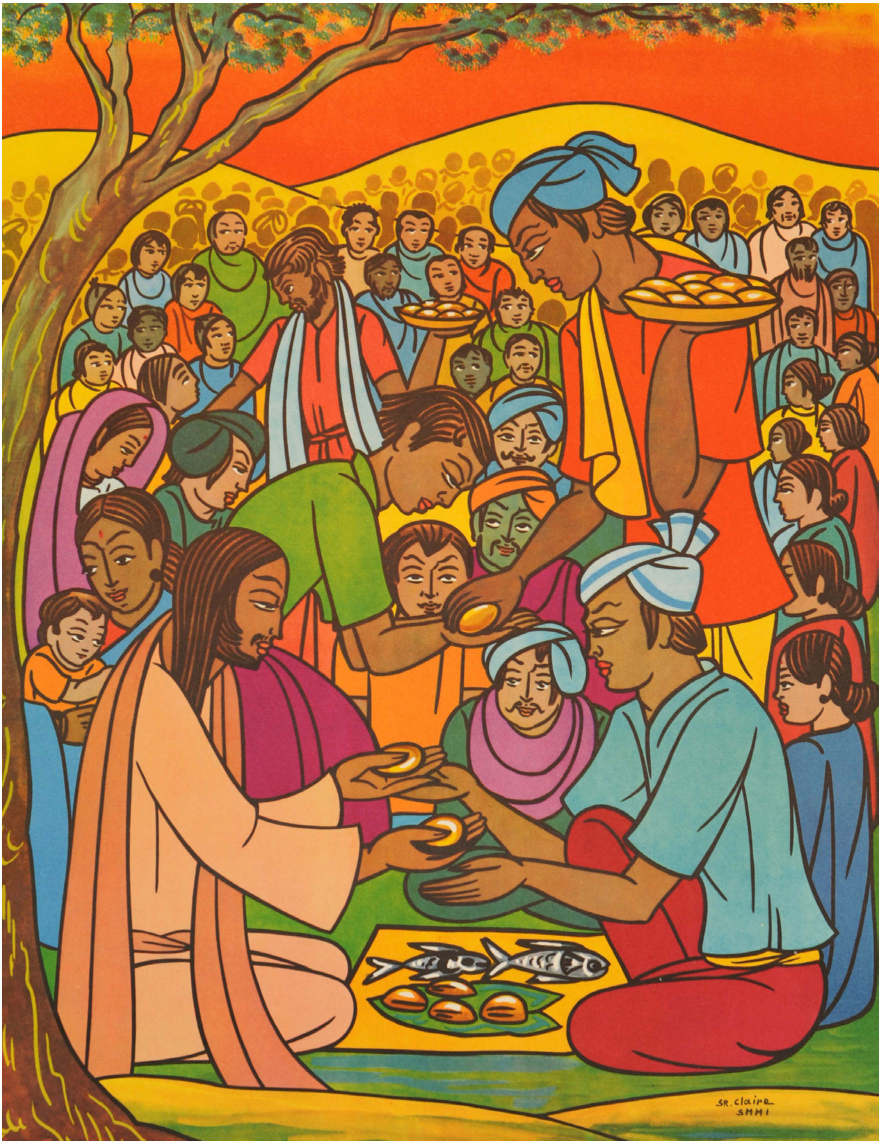
SR. claire
SMMI

तब यीशु जी उसका हाथ पकड़कर गाँव से बाहर ले गये। और वहां जाकर उन्होंने उसकी आँखों में लगाने के लिये थूका, और अपना हाथ उसकी आँख में रखकर हटाने के बाद पूछा, “क्या तुझे दिखाई दे रहा है?” उसने आँख उठाकर कहा, “मैं लोगों को देख सकता हूं लेकिन साफ नहीं, वे पेड़ों जैसे दिख रहे हैं और चल रहे हैं।”

तब यीशु जी ने फिर अन्धे की आँखों में अपना हाथ रखा। अन्धे ने इधर-उधर देखकर कहा, “हां, अब मैं साफ देख सकता हूं!”

यीशु जी ने उसको समझाकर कहा, “सीधे अपने घर जा और गाँव में इस बात के बारे में किसी से कुछ भी नहीं कहना।”

फिर यीशु जी और उनके शिष्य कैसरिया फिलिप्पी के रास्ते आस-पास के सब गाँवों में चले गये। रास्ते में यीशु जी ने अपने शिष्यों से पूछा, “लोग मुझे क्या समझते हैं?”

शिष्यों ने यीशु जी से कहा, “लोग आपको गुरु योहन, या एलिय्याह या कोई दुसरे परमात्मा का दूत समझते हैं जो मरे हुओं में से जीवित हुए हैं।”

यीशु जी ने अपने शिष्यों से पूछा, “और तुम क्या समझते हो कि मैं कौन हूं?” पारस ने उत्तर दिया, “आप हमारे मुक्तिदाता हैं!” यीशु जी ने उससे कहा, “तूने ठीक कहा, लेकिन इस बात के बारे में तुम लोगों से अभी कुछ मत कहना।”

प्रभु यीशु बताते हैं कि मैं मारा जाऊँगा

(मरकुस ८:३१-३८, ९:१)

फिर यीशु जी उनको बताने लगे, “मैं जो परमात्मा की तरफ से आया हूं, मैं बहुत सताया जाऊँगा। धर्म गुरु, पुरोहितों के साहब और प्रधान सब मेरा निरादर-तिरस्कार करेंगे, और वे मुझे मार देंगे। लेकिन उसके तीसरे दिन मैं मरे हुओं में से जीवित किया जाऊँगा।” लेकिन यह बात सुनकर पारस उनको एक तरफ लेकर गया और डांट कर कहने लगा, “आप को ऐसा नहीं कहना चाहिए।”

लेकिन यीशु जी ने पीछे मुड़कर पारस को फटकार लगाकर कहा, “शैतान, तू मुझ से दूर चला जा, क्योंकि तेरी सोच-विचार परमात्मा के जैसा नहीं है पर लोगों के जैसा है। तब तू ऐसी बात कर रहा है।”

तब यीशु जी ने दूसरे लोगों को भी बुलाकर कहा, “जो भी मेरा शिष्य बनना चाहता है, वह अपनी सभी इच्छाओं को छोड़कर मेरे पीछे आ जाये, चाहे इसके बदले तुम्हारे प्राण ही क्यों नहीं चले जायें। क्योंकि जो अपने प्राण को बचाना चाहता है, उनको अमृत जीवन नहीं मिलेगा, लेकिन जो मेरे लिये अपने प्राण को देने के लिये तैयार होगा, उनको अमृत जीवन मिलेगा।

अगर आदमी पूरे संसार को पा ले लेकिन अमृत जीवन को गवा देगा, तब उसको इन बातों से क्या फायदा? क्योंकि जब तुमने अपने अमृत जीवन को एक बार छोड़ दिया तब उसको दुबारा पाने के लिये तुम परमात्मा को कुछ भी नहीं दे सकते हो।

अगर तुम यह कुर्कमी और पापी लोगों के सामने मुझे और मेरे बतायी बातों को अपनाने में शरमाओगे, तब जब मैं अपने पिता की महिमा और पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आउंगा, तब मैं भी तुम को नहीं अपनाउंगा।”

यीशु जी ने ऐसा भी कहा, “मैं तुम से सच कहता हूं कि यहां खड़े हुए लोगों में से कोई ऐसा भी है जो उस समय तक नहीं मरेंगे, जब तक परमात्मा के राज्य को सामर्थ के साथ आया नहीं देख लेते।”

शिष्य प्रभु यीशु का असली रूप देखते हैं

(मरकुस ९:२-१०)

छै दिन के बाद यीशु जी अपने शिष्य पारस, जयकर और योहन को लेकर एक ऊंचे पहाड़ के एकान्ट में गये। वहां उनके सामने यीशु जी का रूप बदल गया। उनके कपड़े ऐसे चमकदार और श्वेत हो गए कि धरती में कोई भी धोबी उनको इतना साफ नहीं कर सकते थे। और शिष्यों ने एकदम अपने पूर्वज एलिय्याह और मोशेश को भी वहां देखा, जो यीशु जी के साथ बात कर रहे थे।[८]

तब पारस ने यीशु जी से कहा, “गुरुजी, यह कितना अच्छा है कि हम भी यहां हैं। हम तीन तम्बू खड़े करते हैं, एक तुम्हारे लिये, एक मोशेश के लिये और एक एलिय्याह के लिये।” उसके समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि हम क्या कहें, क्योंकि यह सब देखकर वे बहुत डर गये थे।

---

८ एलिय्याह और मोशेश दोनों परमात्मा के सेवक थे। उनके बारे में यहूदियों के धर्म-ग्रंथ में बताया जाता है। परमात्मा यहां दिखा रहे हैं कि यीशु जी धर्म-ग्रंथ की बातें पूरा करते हैं।

तब एक बादल ने आकर उनको ढक दिया और उस बादल में से परमात्मा की यह आवाज आई, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी बात को मानो!” अचानक जब शिष्यों ने अपनी नजर इधर-उधर डाली, तब उन्होंने वहां यीशु जी के अलावा और किसी को नहीं देखा।

जब वे पहाड़ से नीचे आ रहे थे, उस समय यीशु जी ने अपने शिष्यों को समझाया, “जो तुमने देखा, उसके बारे में लोगों से तब तक कुछ भी मत कहना, जब तक कि मैं मरे हुओं में से जीवित नहीं हो जाऊँगा।” और उन्होंने इस बात को अपने मन में रखा था, लेकिन वे आपस में बात कर रहे थे कि मरे हुओं में से जीवित हो उठने का क्या अर्थ है?

प्रभु यीशु भूत लगे लड़के को अच्छा करते हैं

(मरकुस ९:१४-२९)

जब यीशु जी और उसके तीन शिष्य वहां आये जहां दूसरे शिष्य थे, तब उन्होंने देखा कि बहुत लोग उनके चारों ओर जमा हो रहे हैं और वे धर्म गुरुओं के साथ बहस कर रहे हैं। और जब लोगों ने यीशु जी को वहां आते देखा, तब उन्होंने आकर उनको प्रणाम किया।

तब यीशु जी ने शिष्यों से पूछा, “तुम इनके साथ बहस क्यों कर रहे हो?” इतने में भीड़ में से एक आदमी ने उत्तर दिया, “गुरू जी, मैं अपने पुत्र को यहां लाया कि आप उसको अच्छा कर देंगे, क्योंकि उस में एक भूत है जो उसको बोलने नहीं देता। और जहां-तहां वह भूत उसको पकड़ कर दबा देता है, उसके मुंह से झाग आता है, वह दांत पीसता और फिर अकड़ जाता है। इसलिये मैंने आपके शिष्यों से भूत को निकालने के लिये कहा, लेकिन वे नहीं निकाल सके।”

यह सुनकर यीशु जी ने अपने शिष्यों से कहा, “हद है तुम्हारे लिये, क्या तुम को अभी तक मुझ पर विश्वास नहीं है? मैं कितने दिन तक तुम्हारे साथ रहुंगा कि तुम विश्वास करोगे, और तुम्हारे अविश्वास को मैं कब तक सहन करुंगा? जाओ, उस लड़के को मेरे पास लाओ।” और वे उसको उनके पास ले आये और यीशु जी को देखकर भूत ने लड़के को मरोड़ दिया और उसके मुंह से झाग आने लगा और वह मिट्टी में लोट पोट करने लगा।

तब यीशु जी ने उस लड़के के पिता से पूछा, “यह भूत इसे कब से लगा है?” उसने बताया, “बचपन से। और यह भूत इसे इसी तरह परेशान नहीं करता बल्कि आग और पानी में भी फेंक देता है, जहां यह मर जाये। अगर तुम कुछ कर सकते हो तब हम पर दया करके हमारी मद्द करो।” यीशु जी ने उससे कहा, “अगर-मगर वाली कोई भी बात नहीं है। मैं उनके लिये सब कुछ कर सकता हूं जो मुझ में विश्वास करते हैं।” तब लड़के के पिता ने जोर देकर कहा, “मेरे पास विश्वास है, आप मेरे विश्वास को बढ़ाने में मेरी मद्द करें!”

जब यीशु जी ने देखा की भीड़ बढ़ती जा रही है, उन्होंने भूत को डांटकर कहा, “हे बहरी और गूंगी आत्मा, मैं तुझसे कहता हूं कि इसमें से चल जा और फिर इसमें कभी दुबारा मत आना!” और तब वह भूत चिल्लाते हुए उस लड़के को मरोड़कर उस में से चले गया और वह लड़का मुरदा सा हो पड़ा। और लोग ऐसा कहने लगे कि यह मर गया है। लेकिन यीशु जी ने उस लड़के के हाथ पकड़ कर उसको उठाया और वह खड़ा हो गया, और वह बिल्कुल अच्छा भी हो गया!

जब वहां से यीशु जी और उनके शिष्य घर आये, तब एकांत में उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, “हम उस भूत को क्यों नहीं निकाल सके?” यीशु जी ने उत्तर दिया, “ऐसे प्रकार के भूतों को तुम केवल प्रार्थना करके निकाल सकते हो क्योंकि इनको निकालने का और कोई दूसरा चारा नहीं है।”

प्रभु यीशु दुबारा बता रहे हैं कि मैं मारा जाऊँगा

(मरकुस ९:३०-३२)

यीशु जी और उनके शिष्य वहां से गलील प्रदेश की तरफ जा रहे थे। यीशु जी नहीं चाहते थे की किसी को भी इसका पता चले, क्योंकि वे अपने शिष्यों को उपदेश देना चाहते थे। उन्होंने कहा, “मैं जो परमात्मा की ओर से आया हूं, लोगों के हाथ पकड़ाया जाऊँगा। और वे मुझे मार देंगे, लेकिन मरने के तीसरे दिन मैं फिर जीवित करा जाऊँगा।”

पर शिष्य यीशु जी की यह बात को समझ नहीं सके और वे उन से इसके बारे में सवाल पूछने में भी डर रहे थे।

जो बड़ा होना चाहता है, वह अपने को छोटा बनाये

(मरकुस ९:३३-४१)

इसके बाद वे कफरनहूम नगर में आये। घर के अन्दर जाकर यीशु जी ने उनसे पूछा, “तुम रास्ते में किस बात के बारे में बात कर रहे थे?” लेकिन शिष्य शर्म के मारे चुप रहे, क्योंकि वे रास्ते-रास्ते यह बात कर रहे थे कि उनमें सब से बड़ा कौन है।

तब यीशु जी ने सब शिष्यों को बुलाकर उनसे कहा, “अगर कोई बड़ा होना चाहता है, तब वह सब से छोटा बने और सब की सेवा करे।” फिर उन्होंने एक बच्चे को लेकर उनके बीच में खड़ा किया। और उसको गोद में लेकर कहा, ”जो मेरे नाम से एक बच्चे का स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है। और जो मेरा स्वागत करता है, वह सिर्फ मेरा नहीं बल्कि उनका स्वागत भी करता है जिसने मुझे भेज रखा है।”

फिर उनके शिष्य योहन ने कहा, “गुरू जी, हम ने एक ऐसे आदमी को देखा जो आपके नाम से भूतों को निकाल रहा था, और हमने उसको रोकना लगाया क्योंकि वह हमारी तरह आपका शिष्य नहीं है।” तब यीशु जी ने उत्तर दिया, “उस आदमी को तुम मत रोकना, क्योंकि कोई ऐसा नहीं है जो मेरे नाम से सामर्थ के काम दिखाये और उसके बाद मेरा निरादर करे। जो हमारे विरोध में नहीं है, वह हमारी ओर है।

हां, ऐसा भी है की अगर मेरे शिष्य होने के कारन कोई तुमको एक गिलास पानि भी पिलाए, तब परमात्मा उसे उसका ईनाम जरुर देगा।”

दूसरों को परमात्मा के रास्ते से नहीं भटकाना चाहिये

(मरकुस ९:४२-४८)

लेकिन यीशु जी ने ऐसा भी कहा, “जो परमात्मा पर विश्वास करता है, वह आदमी चाहे सब से छोटा ही क्यों ना हो, अगर कोई आदमी उसको परमात्मा के रास्ते से भटकाता है, तब परमात्मा उसको अवश्य बहुत कठिन सजा देंगे। इससे यह अधिक अच्छा होता कि कोई आदमी उसके गले में बड़ा चक्की का पाट बांधकर उसे गहरे ताल में फेंक देते, जिससे वह दूसरे को पाप करने के लिये नहीं उकसा सके और परमात्मा के द्वारा मिलने वाली कठिन सजा से बच जाये।

अगर तुम्हारो हाथ तुम को परमात्मा के रास्ते से भटकाता है, तब उसको काट दो। अधिक अच्छा है कि तुम एक हाथ के लूले होकर अमृत जीवन को पाओगे, कहीं ऐसा न हो कि तुम दो हाथ ले कर नरक में डाले जाओ, जहां की आग में तुम हमेशा तक जलते रहोगे।

अगर तुम्हारो पाँव तुम को परमात्मा के रास्ते से भटकाता है, तब तुम उसको काट दो। अधिक अच्छा है कि तुम एक पाँव के लंगड़े होकर अमृत जीवन को पाओगे, कहीं ऐसा न हो कि तुम दो पाँव लेकर भी नरक में डाले जाओ।

अगर तुम्हारेी आँख तुम को परमात्मा के रास्ते से भटकाती है, तब तुम उसको निकाल दो। अधिक अच्छा है कि तुम एक आँख के अन्धे होकर परमात्मा के राज्य में प्रवेश करोगे, कहीं ऐसा न हो कि तुम दो आँख लेकर भी नरक में डाले जाओ, जहां आदमी हमेशा बहुत दुःख पाते हैं और वहां की आग में तुम हमेशा तक जलते रहोगे।”

तलाक के बारे में उपदेश

(मरकुस १०:१-१२)

इसके बाद यीशु जी कफरनहूम छोड़कर यरदन के उस पार के प्रदेश में आये और वहां भी एक बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गयी। और यीशु जी उनको उपदेश देने लगे जैसे वे हमेशा देते थे। तब कुछ धर्म गुरु यीशु जी के पास आये और उनसे पूछने लगे, “आदेश संहिता के अनुसार कोई आदमी अपनी पत्नी को तलाक देकर छोड़ सकता है या नहीं छोड़ सकता है?” क्योंकि वे यह जानना चाहते थे कि यीशु जी की राय किसकी ओर है।

तब उनको यीशु जी ने उत्तर दिया, “परमात्मा ने अपने सेवक मोशेश के द्वारा तुम को क्या आदेश दे रखे थे?” उन्होंने कहा, “मोशेश के आदेश संहिता में लिख रखा है कि जो आदमी अपनी पत्नी को तलाक देना चाहता है, वह उसको तलाक-पत्र देकर छोड़ सकता है।”

यीशु जी ने उनसे कहा, “मोशेश ने यह इसलिये कहा, क्योंकि तुम्हारे पूर्वज अपनी जिद पूरी करना चाहते थे। और तुम भी ऐसे ही हो। लेकिन परमात्मा ने संसार के शुरु में औरत और आदमी को इसलिऐ बनाया कि वे एक साथ रह सकें। जब आदमी का शादी होता है, तब जितना प्रेम वह अपने माता-पिता को

करता था, उससे अधिक प्रेम वह अपनी पत्नी के साथ करता है, और इसी कारण से वे एक ही हैं। इसलिये जिसको परमात्मा ने जोड़ा है, आदमी उसको बिल्कुल अलग नहीं करें।"

शिष्यों ने घर जाकर इसके बारे में यीशु जी से सवाल पूछा। यीशु जी ने उनसे कहा, "जो अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी औरत के साथ शादी करता है, वह अपनी पहली वाली औरत के साथ पाप करता है। और जो पत्नी अपने पहले आदमी को तलाक देकर दूसरे आदमी के साथ शादी करती है, वह अपने पहले आदमी के साथ पाप करती है।"

प्रभु यीशु बच्चों को आशीर्वाद देते हैं

(मरकुस १०:१३-१६)

कुछ लोग छोटे-छोटे बच्चों को यीशु जी के पास लाये कि वे उनको छुकर आशीर्वाद दे सकें। लेकिन उनके शिष्यों ने लोगों को डाँटा, "तुम गुरू जी को परेशान न करो!"

यह देखकर यीशु जी ने बहुत नराज होकर अपने शिष्यों से कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो, मना नहीं करो क्योंकि परमात्मा का राज्य इनके लिये है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो आदमी परमात्मा के राज्य को एक छोटे बच्चे की तरह नहीं अपनाऐगा, वह परमात्मा के राज्य में कभी नहीं पहुँच सकता है।"

फिर यीशु जी ने बच्चों को अपनी गोद में रखा और एक-एक करके उनके सिर में हाथ रख कर उनको आशीर्वाद देकर कहा, "परमात्मा हमेशा तुम्हारा अच्छा करते रहें।"

अमृत जीवन पाने के लिये क्या करना चाहिये

(मरकुस १०:१७-३१)

यीशु जी जब रास्ते-रास्ते कहीं जा रहे थे, उस समय एक आदमी दौड़कर उनके पास आया और उसने उनके सामने घुटने टेक कर ऐसा पूछा, "उत्तम गुरू जी, परमात्मा के साथ हमेशा रहने के लिये मैं क्या करूं?"

यीशु जी ने उससे कहा, “मुझे उत्तम क्यों कहता है? परमात्मा को छोड़ कर और कोई भी उत्तम नहीं हैं।[९] तू परमात्मा के दी हुई आज्ञा को जानता ही है - हत्या नहीं करना, कुकर्म ना करना, चोरी ना करना, झूठी गवाही ना देना, झूठ बोलकर किसी से कुछ ना लेना, अपने माता-पिता के लिये अच्छा करना।” उसने कहा, “गुरू जी, इन सभी बातों को मैं बचपन से मानता हूं।”

उसको देखकर यीशु जी के मन में प्रेम आ गया। उन्होंने उससे कहा, “तूने एक काम और भी नहीं किया। जा, जो भी तेरे पास है, उसको बेचकर जो पैसे मिले उनको तू गरीबों में बांट दे। फिर उसके बाद तू मेरे साथ आ जाना। और तब तुझे परम स्वर्ग में असली धन मिलेगा।” यह सुनकर उस आदमी का मुंह का रंग काला हो गया और वह निराश होकर वहां से चला गया, क्योंकि उसके पास बहुत धन-सम्पत्ति थी और उसके लिये इसे छोड़ना बहुत मुश्किल था।

तब यीशु जी ने शिष्यों से कहा, “धनवानों के लिये परमात्मा के राज्य में पहुंचना कितना मुश्किल है!” शिष्य यीशु की यह बात सुनकर चकित हुऐ, लेकिन यीशु जी ने उनसे फिर कहा, “साथियो, जो धन में विश्वास रखते हैं, उनके लिये परमात्मा के राज्य में पहुंचना बहुत मुश्किल है। परमात्मा के राज्य

में एक धनवान के पहुंचने से अधिक सरल ऊंट का सूई के छेद में से बाहर निकलना आसान है।”

यह सुनकर शिष्य और भी अधिक चकित हो पड़े और एक-दूसरे के साथ बात-चीत करने लगे, “अगर ऐसा है तब किसका उद्धार हो सकता है?”[१०] यीशु जी ने उनसे कहा, “लोगों के लिये तो यह असंभव है लेकिन परमात्मा के लिये सब कुछ संभव है।”

इतने में पारस ने कहा, “गुरू जी, देखो, हम अपना सब कुछ छोड़ कर आपके शिष्य बन गये हैं।” यीशु जी ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो भी आदमी मेरे और शुभ संदेश के लिये अपना घर, माता-पिता, भाई- बहन, बच्चे

---

९ मिकैं उत्तम किलै कुंछै? परमात्मा कैं छोड़िबेर और क्वे लै उत्तम न्हैं”, यीशुज्यूल यौ यैक लिजी कौ कि उ मैंस ध्यान दिबेर सोचो कि उ मिकैं के समझुं। अगर मी उत्तम छु और परमात्माक अलावा और क्वे लै उत्तम न्हैं तब यैल सिद्द है जां कि मी स्वयं परमात्मा छूं।

१० यहूदी लोग सोचते थे कि अमीर लोगों को परमात्मा की ओर से विशेष आशिर्वाद मिला है और वे सब से पहले परमात्मा के राज्य में पहुंचेंगे। पर यहां यीशु जी ने बताया कि ऐसा नहीं है।

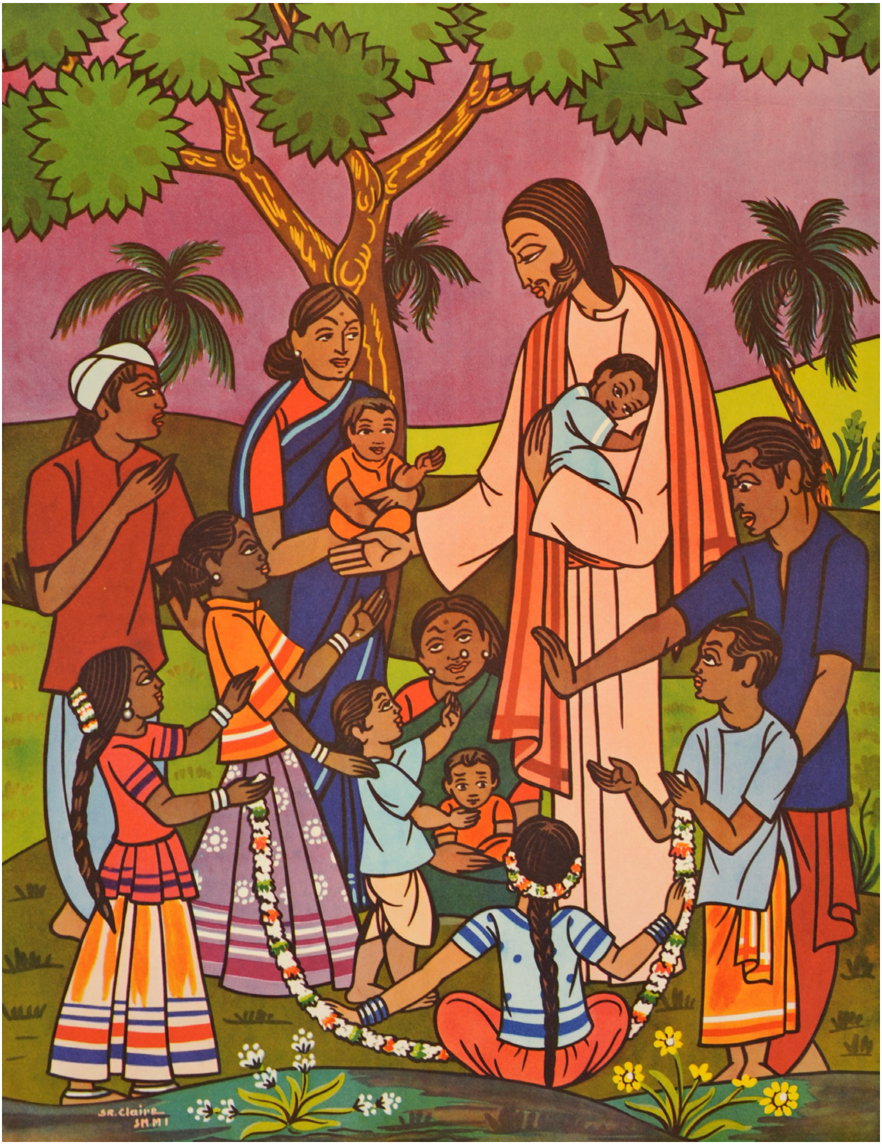
SR. Claire
SMMI

और खेत खलीहान सब को छोड़ देगा, वह यह सब कुछ को सौ गुना अधिक पायेंगे। पहले उसको बहुत परेशानी भी उठानी पड़ेगी, लेकिन इसके बदले में उसको आने वाले समय में अमृत जीवन भी मिलेगा।

बहुत लोग जो इस संसार की नजर में बड़े हैं, वे परमात्मा के राज्य में छोटे करे जायेंगे और जो लोग संसार के नजर में छोटे हैं, वे परमात्मा के राज्य में बड़े करे जायेंगे।"

प्रभु यीशु प्रेम करना सिखाते हैं

(लूका १०:२५-३७)

एक दिन यीशु जी की परीक्षा लेने के लिये एक धर्म गुरु आया। उसने यीशु जी से पूछा, "हे गुरू जी, अमृत जीवन पाने के लिये मैं क्या करूं?"

यीशु जी ने कहा, "धर्म-ग्रंथ में क्या लिखा है, तुम उस में क्या पढ़ते हो?" उसने उत्तर दिया, "तू अपने प्रभु परमात्मा से अपने पूरे मन से, पूरी ताकत और पूरी बुद्धि से प्रेम कर और अपने पड़ोसी को भी अपनी तरह प्रेम कर।"

यीशु जी ने उससे कहा, "तुम ने ठीक उत्तर दिया। ऐसा ही करो तब तुम जीवित रहोगे।"

लेकिन धर्म गुरु ने अपने को धर्मी बताने के लिये यीशु जी से पूछा, "मेरा पड़ोसी कौन है?"

यीशु जी ने उत्तर दिया, "एक आदमी था जो यरुशलेम से यरीहो नगर जा रहा था। रास्ते में उसको चोरों ने पकड़ लिया। और उसको मार-मारकर अधमरा छोड़ कर उसका समान लूटकर चले गये। थोड़ी देर बाद एक पुरोहित उस रास्ते से जा रहा था, लेकिन वह उसे अन्देखा करके चला गया। इसके बाद परमात्मा के मंदिर में काम करनेवाला एक आदमी भी उस रास्ते से गया। लेकिन वह भी उसको अन्देखा करके चला गया। अब एक सामरी जाति का आदमी जिनको सब तुच्छ समझते थे उस रास्ते से जा रहा था। जब उसने उस अधमरे आदमी को देखा, तब उसको तरस आया। और उसने उसके घावों में दवाई-पट्टी बाँधी , और उसको अपने गधे में बैठाकर एक सराय में ले गया और उसकी सेवा की। दूसरे दिन उसने दो चाँदी के सिCके निकालकर सराय

के मालिक को दिये, और उससे कहा, कि तुम इसकी सेवा अच्छे से करना। तुम्हारा जो भी खर्च लगेगा मैं लौटते समय तुम को दे जाऊँगा।"

यीशु जी ने धर्म गुरु से पूछा, "उनमें से उस आदमी का सच्चा पड़ोसी कौन था?" उसने उत्तर दिया, "जिसने उस पर तरस खाया।" यीशु जी ने कहा, "जाओ, तुम भी ऐसा ही करो।"

यीशु जी प्रार्थना करने के बारे में सिखा रहे हैं

(लूका ११:१-१३)

एक समय यीशु जी एक स्वान में प्रार्थना कर रहे थे। प्रार्थना खत्म होने के बाद उनके एक शिष्य ने उन से कहा, "गुरू जी, हमको प्रार्थना करना सिखायें।" तब यीशु जी ने अपने शिष्यों से कहा, "जब तुम प्रार्थना करते हो तब ऐसा कहना, हे पिता परमात्मा, तुम्हारा नाम पवित्र माना जाये। तुम्हारा राज्य आये। हमको हमारे रोज का खाना दिया करना। हमारे पापों को माफ करना, क्योंकि हम भी अपने सभी कसूरवारों को माफ करते हैं। और हमको ऐसे परीक्षा में न डालना कि हम कोई पाप कर बैठें।"

फिर यीशु जी ने उन से ऐसा भी कहा, "मान लो कि कोई आधी रात को अपने साथी के पास जाकर ऐसा कहे की यार, मुझे तीन रोटी उधार दे दो! क्योंकि मेरा एक साथी सफर करके मेरे यहां पहुंचा है और उसको खिलाने-पिलाने के लिये मेरे घर में कुछ भी नहीं है। और यह सब सुनकर वह अन्दर से यह उत्तर थोड़ी देंगा की मुझे परेशान नहीं करो। अब तो मैने दरवाजा भी बन्द कर दिया है, मेरे बच्चे भी सो रहे हैं, मैं उठकर तुझे कुछ नहीं दे सकता हूं। मैं तुम से कहता हूं, अगर वह आदमी उसका दोस्त नहीं भी होता, तब भी वह पक्का उठकर उसको कुछ भी देगा, क्योंकि वह जोर देकर मांग रहा है।

इसलिये मैं तुम से कहता हूं, मांगो, तब तुम को दिया जायेंगा, ढूंडोंगे तब पाओगे, खट-खटाओंगे तब तुम्हारे लिये खोला जायेंगा। क्योंकि जो मांगता है, उसको मिलता है, जो ढुड़ता है, वह पाता है, और जो खट-खटाता है, उसके लिये खोला जाता है।

अगर तुम्हारा पुत्र तुम से मछली मांगता है, क्या तुम उसको मछली के बदले में सांप थोड़ी दोगे? और अगर वह अंडा मांगे, क्या तुम उसको बिच्छू थोड़ी

दोगे? तुम पापी आदमी होने पर भी अगर अपने बच्चों को बगैर कोई रोक-टोक के अच्छी चीज देना जानते हो, तब तुम्हारा पिता परमात्मा भी अपने मांगने वालों को ईश-आत्मा का दान क्यों नहीं देंगे?"

परमात्मा में भरोसा रखना चाहिये

(लूका १२:२२-३४)

यीशु जी ने फिर कहा, "मैं तुम से कहता हूं कि चिन्ता न करो, ना अपनी जिन्दगी के लिये कि हम क्या खायेंगे और न अपने शरीर के लिये कि हम क्या पहनेंगे क्योंकि जीवन खाने, और तन कपड़े से बढ़कर है। तुम कौवों को ध्यान से देखो! वे ना तो बोते हैं और ना काटते हैं, ना तो उनके भंडार है और न आंगन। तब भी परमात्मा उनको खिलाते हैं। और तुम सब चिड़ियों से बहुत बढ़कर हो! क्या तुम चिन्ता कर के अपनी आयु को एक पल भर थोड़ी बढ़ा सकते हो? अगर तुम इतना छोटा काम भी नहीं कर सकते हो, तब दूसरे बातों के लिये चिन्ता क्यों करते हो?

फूलों को देखो कि वे कैसे बढ़ते हैं। वे ना तो मेहनत करते हैं और ना कोशिश करते हैं, फिर भी मैं तुम को बताता हुं कि सालोम का राजा भी अपनी सारी शान-शौकत में भी उनमें से एक के तरह भी सजा-धजा नहीं था। हे कम विश्वास करने वालों, अगर परमात्मा मैदान की घास को जो आज है और कल आग में फेंक दिया जायेंगे ऐसे पहनाते है, तब वे तुम को क्यों नहीं पहनायेंगे?

इसलिये तुम भी इस बात के लिये कुछ चिन्ता न करो कि हम क्या खायेंगे या क्या पहनेंगे। दुनिया के सब लोग इन चीजों के पीछे दौड़ते हैं, पर तुम्हारा पिता परमात्मा जानता कि तुम को इन सब चीजों की जरूरत है। इसलिये तुम सब से पहले परमात्मा के राज्य की ओर अपना मन लगाओ, तब ये सब चीज भी तुम को अपने आप मिल जायेगी।

ओ छोटे झुन्ड, नहीं डर, क्योंकि तुम्हारे पिता परमात्मा ने तुम को अपने राज्य देने की कृपा की है। अपनी सम्पत्ति को बेचकर दान कर दो। तब तुम अपने लिये ऐसा बटुवा बनाओ जो कभी नहीं फटता, और परम स्वर्ग में कभी नहीं नाश होने वाला धन जमा करो। वहां ना तो कोई चोर आता है और ना कीड़े खाते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वही तुम्हारा मन भी लगा रहता है।"

अपने को बड़ा नहीं समझना चाहिये

(लूका १८:९-१४)

इसलिये कि कुछ लोग अपने को धर्मी मानते हैं, और दुसरों को नीच समझते हैं, उनके लिये यीशु जी ने यह किस्सा सुनाया।

”दो आदमी प्रार्थना करने के लिये परमात्मा के मंदिर में गये। उन में से एक धर्म गुरु था और दूसरा चुंगी लेने वाला था। और धर्म गुरु खड़े-खड़े ऐसी प्रार्थना कर रहा था, “हे परमात्मा, मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि मैं दूसरे लोगों के जैसे चोर, अन्यायी, कुकर्मी नहीं हूं और ना इस चुंगी लेने वाले के जैसा हूं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूं और अपनी पूरी कमाई में से दान भी देता हूं।”

लेकिन चुंगी लेने वाला आदमी थोड़ी दूर में खड़ा था और उसको शर्म से स्वर्ग की ओर आँख उठाने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी। और उसने अपनी छाती पीट-पीटकर कहा, “हे परमात्मा, मुझ पापी में दया कीजिये!”

यीशु जी ने कहा, “मैं तुम से कहता हूं कि उस धर्म गुरु के नहीं बल्कि चुंगी लेने वाला पाप माफ हो कर अपने घर गया। क्योंकि जो कोई भी अपने को बड़ा समझता है, वह छोटा करा जायेंगा। लेकिन जो अपने को छोटा समझता है, वह बड़ा करा जाऐगा।”

प्रभु यीशु तीसरे बार बता रहे हैं कि मैं मारा जाऊँगा

(मरकुस १०:३२-३४)

इसके बाद यीशु जी अपने शिष्यों के साथ यरुशलेम के रास्ते में जा रहे थे। उनके शिष्य और साथ-साथ आने वाले लोग डरे हुए थे, क्योंकि जहां यीशु जी जा रहे थे वहां के लोग उसके खिलाफ है, फिर भी यीशु जी वहां क्यों जा रहे हैं? तब यीशु जी अपने बारह शिष्यों को अलग ले जाकर उनको बताने लगे की मुझ पर क्या क्या बीतेगी। उन्होंने कहा, “देखो, हम यरुशलेम जा रहे हैं और वहां मैं पुरोहितों के साहब और धर्म गुरु के हाथ में सौंपा जाऊंगा और वे मुझे जान से मारने के लायक ठेहराऐंगे और रोमी सरकार के हाथ में सौंप देंगे और रोमी मेरा निरादर करेंगे, मुझ में थूकेंगे, मुझे चाबुक से मारेंगे और मुझे मार देंगे, लेकिन मैं मरने के तीसरे दिन फिर जिन्दा करा जाऊंगा।”

दो शिष्य सब से बड़ा होना चाहते थे

(मरकुस १०:३५-४५)

चलते-चलते शिष्यों में से दो भाई, जयकर और योहन ने यीशु जी से कहा, “गुरू जी, हम चाहते है कि जो कुछ भी हम आप से मांगे, आप उसे पूरा करोगे।” तब यीशु जी ने उन से कहा, “तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे लिये क्या करूं?” उन्होंने कहा, “जब आप राजा बनोगे, तब हमको सब से बड़े पद में बैठाकर अपने दाहिने और बाये ओर बैठ ने की आज्ञा देना।” यीशु जी ने उन से कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम क्या मांग रहे हो। जो दुःख मैने सहना है, क्या तुम उसको सह पाओगे? जो अत्याचार मुझे सहना है, क्या तुम उसको सह पाओगे?” उन्होंने उत्तर दिया, “हां, हम सह सकते हैं।” यीशु जी ने कहा, “जो दुःख और अत्याचार मुझे सहन करना है, सच-मुच वह तुम भी सहोगे। लेकिन तुम को अपने दाहिने या बांये ओर बैठाना मेरा काम नहीं है, क्योंकि यह स्वान उनका है, जिनके लिये परमात्मा ने यह तैयार किया है।”

जब बाकी दस शिष्यों को इस बात का पता चला कि जयकर और योहन बड़ा बनने कि बात कर रहे थे, तब वे उनको देखकर नाराज हुए। लेकिन यीशु जी ने सब शिष्यों को अपने पास बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि जो इस दुनिया में अधिकारी माने जाते हैं, वे अपनी जनता में अपने मन का राज्य करते हैं। लेकिन तुम जो मेरे पीछे आ रहे हो तुम में ऐसी बात नहीं होनी चाहिये। जो तुम में बड़ा होना चाहता है, वह सब का सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहता है, वह सब का दास बने। वैसे ही मैं परमात्मा की ओर से इसलिये नहीं आया कि मैं लोगों से अपनी सेवा कराऊं, बल्कि इसलिये आया की मैं खुद सब लोगों की सेवा करूंगा और बहुतों के मोक्ष के लिये अपने लहू को पानी की तरह बहा दूं।”

प्रभु यीशु फिर एक अन्धे को अच्छा कर रहे हैं

(मरकुस १०:४६-५२)

इसके बाद जब वे यरीहो नगर से जा रहे थे, तब उस समय सड़क के किनारे में एक अन्धा भीख मांग रहा था, जिसका नाम बरतिमाई था। जब उसने सुना कि इस रास्ते से यीशु जी जा रहे हैं, तब उसने आवाज लगाकर कहा, “हे यीशु जी, दाविद राजा के वंश के, मुझ पर तरस खाओ!” बहुत लोगों ने उसको डांट

कर कहा, “चुप रह!” पर वह और भी जोर से आवाज लगाकर कहने लगा, “हे दाविद के वंश के यीशु जी, मुझ पर दया करो!”

और यीशु जी ने रुक कर कहा, “उसको यहां लाओ।” और लोगों ने अन्धे से कहा, “धीरज रख कर उठ, वह तुझे बुला रहे हैं!” जब उसने ऐसा सुना, तब वह एकदम उठा, और वह अपनी चादर को फैंक कर यीशु जी के पास आया। यीशु जी ने कहा, “मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूं?” अन्धे ने कहा, “हे गुरू जी, मैं देखना चाहता हूं!” यीशु जी ने कहा, “तुम ने मुझ में विश्वास रखा, इसलिये मैं तुम को ठीक करता हूँ।” और उस समय से वह देखने लगा और यीशु जी के साथ चला गया।

यरुशलेम में प्रभु यीशु का स्वागत

(मरकुस ११:१-११)

जब यीशु जी और उनके शिष्य यरुशलेम से थोड़ा पहले बैतनियाह गाँव में पहुंचे, तब यीशु जी ने दो शिष्यों को यह कहकर भेजा, ”उस सामने के गाँव में जाओ। वहां जाते ही तुम को एक खूंटी में बंधा गधे का बच्चा मिलेगा, जिसमें अभी तक कोई नहीं बैठा है। तुम उसको खोलकर यहां लाना। और अगर कोई कहेगा, “इसे क्यों ले जा रहे हो?”, तब तुम उससे कहना कि हमारे प्रभु को इसकी जरूरत है। वे इसे जल्दी वापिस पहुंचा देंगे।”

शिष्य चले गये और उन्होंने गधे के बच्चे को सड़क के किनारे पर एक घर के बाहर से बंधा पाया। जब वे उसको खोलने लगे। तब वहां खड़े लोगों ने पूछा, “यह क्या कर रहे हो, तुम इस गधे के बच्चे को क्यों ले जा रहे हो?” यीशु जी ने उनको जैसा बताया था, शिष्यों ने उन लोगों से वैसा ही कहा। तब उन लोगों ने शिष्यों को जाने दिया।

वे गधे के बच्चे को यीशु जी के पास ले गये और उसमे अपनी चादर बिछा दिये। फिर यीशु जी उस में बैठे और इस प्रकार यीशु जी यरुशलेम गये।[११] तब बहुत लोगों ने रास्ते में अपने-अपने कपड़े और चादर बिछा दिये। और कुछ

---

११ यहूदी लोगों ने प्रभु यीशु को गधे के बच्चे में बेठा देखकर जकर्याह नाम का परमात्मा के सेवक को ये शब्द पक्का याद आये होंगे। उसने बहुत समय पहले भविष्यवाणी कर के बताया था, “ओ यरुशलेम के लोगों, खुश हो! देखो, तुम्हारो राजा आ रहा है, धार्मिक और मोक्ष ले कर, दयावन्त और गधे के बच्चे में बैठकर!” अभी प्रभु यीशु यह कर के दिखा रहे हैं कि वे सच में वह राजा और मुक्तिदाता हैं जिसका इंतजार वे सब लोग कर रहे थे।

लोगों ने खेतों में से हरी-हरी टहनी काट कर रास्ते में यीशु जी के स्वागत के लिये बिछा दिये। और लोग यीशु जी के साथ आगे-पीछे चलते-चलते चारों ओर से यह जय-जयकार कर रहे थे, "धन्य हो तुम जो प्रभु के नाम से आ रहे हो! जैसा हमारे पूर्वजों के राजा दाविद थे, वैसे ही अभी तुम हमारे राजा होँगे! तुम्हारी जै हो! परम स्वर्ग में परमात्मा की तारीफ हो!"

फिर यीशु जी यरुशलेम नगर में पहुंचे, और वहां परमात्मा के मंदिर में गये। वहां सब कुछ अच्छी से देखकर अपने बारह शिष्यों के साथ फिर वापिस रात बिताने के लिये बैतनियाह गाँव में आये।

प्रभु यीशु परमात्मा के मंदिर से व्यापारियों को निकाल रहे हैं

(मरकुस ११:१२-१९)

दूसरे दिन जब यीशु जी और उनके शिष्य बैतनियाह से यरुशलेम की तरफ जा रहे थे, तब रास्ते में चलते-चलते यीशु जी को भूख लगी। तब कुछ दूर से वे एक अंजीर के हरे-भरे पेड़ को देखकर उसके पास आये कि शायद खाने के लिये कुछ मिल जाये। यीशु जी पेड़ के पास गये पर उन्होंने वहां पत्तों के अलावा और कुछ भी नहीं पाया, क्योंकि अभी फल का समय नहीं था। तब यीशु जी ने कहा, "जा, आज से तुझ में कभी फल नहीं लगेंगे!"[१२]

इसके बाद यीशु जी और उनके शिष्य यरुशलेम आये और यीशु जी परमात्मा के मंदिर में गये। वहां जो लोग आंगन में बैठकर व्यापार कर रहे थे और भेट-बलिदान चढाने के समान को बेच रहे थे, यीशु जी उनको वहां से बाहर निकालने लगे। और उन्होंने उनके मेजों को फेंक दिये, और किसी को भी समान ले कर परमात्मा के घर के आगन के रास्ते नहीं जाने दिया। फिर यीशु जी ने लोगों को डांट कर कहा, "धर्म-ग्रंथ में ऐसा लिख रखा है, "मेरा घर सब जातियों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाया जाऐगा।" पर तुम ने इसे प्रार्थना का घर नहीं बल्कि लुटेरों का अड्डा बना रखा है!"

---

१२ यीशु जी ने उस अंजीर के पेड़ को श्राप देकर हमको ये शिक्षा दी कि हमको अपने जीवन को हरे पेड़ के तरह केवल हरा नहीं बनाना चाहिये बल्कि अच्छे काम कर के उसको हर समय फलदार भी होना चाहिये।

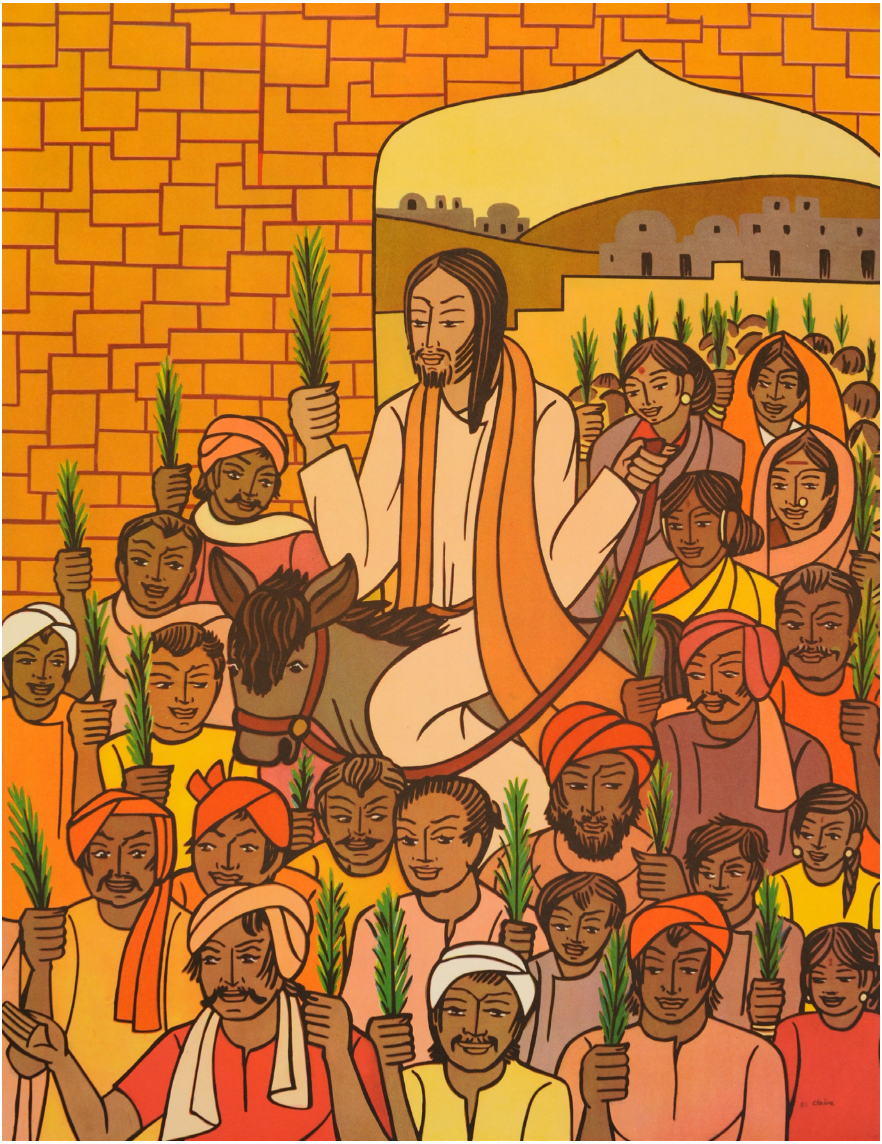

इस कारण से पुरोहितों के साहब और धर्म गुरुओं ने यीशु जी को मारने के बारे में उपाय सोचा। उनको यीशु जी को देखकर डर भी लगती थी, क्योंकि दूसरे लोग चकित हो कर बहुत खुशी से यीशु जी की बातें सुन रहे थे।

और शाम के समय यीशु जी और शिष्य नगर से बाहर बैतनिया गाँव में वापिस चले गये।

विश्वास से सब कुछ हो सकता है

(मरकुस ११:२०-२६)

जब दूसरे दिन यीशु जी और शिष्य फिर यरुशलेम के रास्ते जा रहे थे, तब उन्होंने अंजीर के उस पेड़ को फिर देखा जिसको यीशु जी ने श्राप दे रखा था, और वह अच्छी तरह सूख गया था। तब पारस ने यीशु जी से कहा, “गुरू जी, देखो, अंजीर के पेड़ जिसको आपने श्राप दिया था, वह सुख गया है।”

यीशु जी ने उत्तर दिया, “ताज़ूब नहीं करो, लेकिन परमात्मा में विश्वास रख। मैं तुम से कहता हूं, जो भी विश्वास से इस पहाड़ से कहेगा, उठ और समुद्र में गिर जा, और अपने मन में भ्रम नहीं करेगा बल्कि ये विश्वास करेंगे कि जो मैं कहता हूं, वह हो जाऐगा, तब उसके लिये वैसा ही हो जाऐगा। इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि जो तुम प्रार्थना में मांगते हो, विश्वास करो कि वह तुम को मिलेगा, और वह तुम्हारे लिये हो जाऐगा।”

और यीशु जी ने फिर कहा, “जब तुम प्रार्थना करने के लिये तैयार होते हो, तब उस समय अगर किसी ने भी तुम्हारे लिये बुरा किया हो, तब पहले उसको माफ कर देना। फिर परमात्मा भी तुम्हारे अपराधो को माफ करेंगे। लेकिन अगर हम दूसरों के अपराधो को माफ नहीं करेंगे, तब हमारे पिता परमात्मा भी हमारे अपराधो को माफ नहीं करेंगे”

धर्म गुरु प्रभु यीशु को ललकार रहे हैं

(मरकुस ११:२७-३३)

फिर यीशु जी यरुशलेम में आकर परमात्मा के मंदिर के आंगन में घूम रहे थे। उस समय धर्म गुरु, पुरोहितों के साहब और प्रधान उनके पास आये। और

उन्होंने यीशु जी से सवाल पूछा, “जो तुम ने कल यहां आकर किया, वह क्यों किया और किसके कहने मे तुम यह काम करते हो?”

तब उनको उत्तर देने के लिये यीशु जी ने कहा, “मैं भी तुम से एक सवाल पूछता हूं, और अगर तुम मुझे इसका उत्तर दोगे, तब मैं तुम को बताउंगा कि मैं किसके कहने में यह काम कर रहा हूं। अब तुम ये बताओ की गुरु योहन किसके कहने में लोगों को जल दिक्षा देते थे - परमात्मा के कहने में या लोगों के कहने में? तुम मुझे इसका उत्तर दो।”

तब वे लोग आपस में ये बात करने लगे, “अगर हम कहे, परमात्मा के कहने में, तब यीशु जी कहेंगे की फिर तुम ने गुरु योहन में विश्वास क्यों नहीं रखा। लेकिन अगर हम कहें लोगों के कहने में, तब लोग सुनकर गुस्सा करेंगे, क्योंकि वे गुरु योहन को परमात्मा का सेवक समझते थे।”

इसलिये उन्होंने यीशु जी से कहा, “हमको पता नहीं है।” तब यीशु जी ने कहा, “मैं भी तुम को नहीं बताउंगा कि मैं किसके कहने में यह काम कर रहा हूं।”

दुनियां का उजाला

(योहन८:२-१९)

यीश ने लोगों से फिर कहा, “दुनियां का उजाला मैं हूं। जो मेरी बात मानेंगे वह कभी अंधेरे में नहीं चलेंगे, क्योंकि उनको जीवन का उजाला मिलेगा।” धर्म गुरुओं ने उनसे कहा, “तुम खुद अपने बारे में बता रहे हो, हम यह कैसे मानें।” यीशु ने कहा, “हां, यह मैं अपने बारे में खुद कह रहा हूं, लेकिन फिर भी मेरी बात सच है। क्योंकी मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया हूं, और कहां जा रहा हूं। लेकिन तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आया हूं और कहां जा रहा हूं।

तुम लोगों के बारे में न्याय करते हो लेकिन मैं किसी का न्याय नहीं करता। और अगर न्याय करुं भी तब मेरा फैसला सही होगा। क्योंकी मैं अकेला नहीं हूं, क्योंकि पिता जिन्होंने मुझे भेज रखा है मेरे साथ हैं। तुम्हारे नियम में लिखा है कि दो लोग न्यायालय में एक ही बात बताते हैं, यह बात सच मानी जाती है। जो में अपने बारे में बता रहा हूं, मेरे पिता जिन्होंने मुझे भेज रखा है वे भी बताते हैं।” तब उन्होंने यीशु से कहा, “कहां हैं तुम्हारे पिता?” यीशु जी ने उनसे कहा,

“न तो तुम मुझे जानते हो और न मेरे पिता को। अगर तुम मुझे जानते, तब मेरे पिता को भी जानते।”

अधर्मी खेती कारों के बारे में एक किस्सा

(मरकुस १२:१-१२)

तब यीशु जी ने धर्म गुरुओं को यह किस्सा सुनाया, “एक आदमी था जिसने अंगूर का बगीचा लगाया। उसने उसके चारों ओर घेरा बाड़ी की और बीच में रस निकालने की जगह बनाया, और देख-रेख करने के लिये पक्का मचान बनाया। तब उस बगीचे को लिखित कर के खेती करने वाले को देकर खुद दूर देश चला गया।

जब अंगूर पकने का समय आया, तब अपना भाग लाने के लिये उसने उनके पास एक नौकर भेजा। लेकिन किसानों ने उस नौकर को पकड़ कर मारा-पीटा और खाली हाथ वापिस भेज दिया। इसके बाद अंगूर के मालिक ने फिर दूसरे नौकर को भेजा। बगीचे में काम करने वालों ने उसको अपमानित करा और उसका सिर फोड़ दिया। फिर मालिक ने एक तीसरा नौकर भेजा, लेकिन उन्होंने उसको मार दिया। इसके बाद बहुत नौकर और भेजे, किसानों ने थोडों को जान से मार दिया और बाकियों को अधमरा बना दिया।

अब उसके पास नौकर नहीं थे, केवल एक आदमी बचा था, वह था उसका बेटा, जिसको वह बहुत प्यार करता था। और वे मेरे बेटे का सम्मान करेंगे कहकर, उसको उनके पास भेजा। लेकिन जब यह बेटा किसानों के पास पहुंचा, तब उन्होंने आपस में यह सांठ-गांठ करा, “आओ, हम इसे जान से मार देते हैं! असली वारिस ये ही है, फिर यह सब सम्पत्ति हमारी हो जाऐगा!” तब उन्होंने उसको पकड़ कर मार दिया और उसकी लाश को उठाकर बगीचे के घेरे से बाहर फेंक दिया।”

तब यीशु जी ने धर्म गुरुओं से पूछा, “तुम्हारे विचार से जब बगीचे का मालिक आयेगा, तब वह क्या करेंगे? वे किसानों को पक्का मारकर अपना बगीचा दूसरे किसानों को सौंप देंगे! क्यों तुम ने धर्म-ग्रंथ में नहीं पढ़ा,

> “जिस पत्थर को कारीगरों ने व्यर्थ जानकर फेंक दिया, वही पत्थर मकान के सब से विशेष पत्थर बना।

यह काम परमात्मा का है और हमारे देखने में बड़ा अद्‌भुत है।””

धर्म गुरु यह अच्छे से समझ गये कि यीशु जी ने यह किस्सा हमारे बारे में कहा। इसलिये वे यीशु जी को पकड़ना चाहते थे, लेकिन लोगों के डर के कारण से वे उस समय उनको छोड़ कर चले गये।

धर्म गुरु प्रभु यीशु को फसाना चाहते थे

(मरकुस १२:१३-१७)

कुछ धर्म गुरु और राज्यपाल हेरोदेस के दल के लोग यीशु जी के पास आये, क्योंकि यहूदी नेताओं ने उनको यीशु जी की परीक्षा लेने के लिये भेज रखा था। इसलिये वे आकर यीशु जी से बोले, “गुरू जी, हम यह जानते है कि तुम सच्चे हो। तुम किसी की परवाह भी नहीं करते, और किसी के मुंह देखकर बात भी नहीं करते बल्कि सच्चाई से परमात्मा के रास्ते का उपदेश देते हो। इसलिये अभी हमको बताये, क्या परमात्मा के आदेश संहिता के अनुसार रोमी शासक को चुंगी देना अच्छा है या नहीं है?”

यीशु जी ने उनके छल कपट को भांपकर कहा, “मेरी परीक्षा क्यों लेते हो? एक सिCका लाओ और मुझे दिखाओ।” तब वे एक सिCका लाये। यीशु जी ने उन से पूछा, “इस सिCके में किसी का मुंह और किसका नाम है?” उन्होंने उत्तर दिया, “रोमी शासक का।” इतने में यीशु जी ने उन से कहा, “जो शासक का है उसे शासक को दो, और जो परमात्मा की है उसे परमात्मा को दो।” यह बात सुनकर कि यीशु जी हमारी चाल में नहीं फंसे वे लोग चकित हो पड़े।

दुबारा जीवित होने की बात

(मरकुस १२:१८-२७)

फिर सदूकी दल के धर्म गुरु जो मानते थे कि मरने के बाद जीवन नहीं है, उन्होंने यीशु जी के पास आकर उन से ये सवाल पूछा, ”गुरू जी, मोशेश ने हमारे लिये यह आदेश संहिता बना रखा था कि अगर किसी का भाई अपनी पत्नी के रहने तक बिना संतान मर जाता है, तब उसका भाई उस विधवा के साथ शादी कर के अपने भाई के लिये संतान पैदा कर सकता है, जिससे उसका वंश आगे को बढ़ सकता है।

अब इस बात को सुनो। सात भाई थे और पहले वाले का शादी हुआ, लेकिन वह बिना संतान मर गया। फिर दूसरे भाई ने उस विधवा के साथ शादी किया, और वह भी बगैर संतान मर गया। फिर तीसरे ने, और उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। और इसी तरह सातों भाई बिना संतान मर गये, और उसके बाद वह औरत भी मर गयी। जब वे परमात्मा के न्याय करने के दिन में फिर जिन्दा होंगे, तब वह औरत किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह तो सातों भाईयों कि पत्नी रही थी।"

तब यीशु जी ने उन से कहा, "तुम्हारा दिमाग ठीक है या नहीं है? न तो तुम धर्म-ग्रंथ को जानते हो और न परमात्मा की सामर्थ को। क्योंकि जब लोग उस दिन जिन्दा होंगे, तब वे शादी नहीं करेंगे और नहीं अपनी लड़की को शादी के लिये देंगे, बल्कि इस मामले में वे स्वर्गदूतों के तरह होंगे जो शादी नहीं करते।

इसके अलावा तुम यह बात नहीं मानते कि लोग मरे हुओं से फिर जिन्दा हो जायेंगे, लेकिन धर्म-ग्रंथ में मोशेश के बारे में लिख रखा है कि जब उसके साथ परमात्मा ने आग की झाड़ी से बात की, उन्होंने कहा कि मैं तेरे पूर्वज अब्राहम, इसहाक और जयकर का परमात्मा हूं। अगर परमात्मा अभी तक हमारे पूर्वजों के परमात्मा है, जब कि वे बहुत पहले मर गये, इस से तो साफ हो जाता है कि वे दुबारा फिर जीवित होंगे। क्योंकि परमात्मा मरे हुओं के नहीं बल्कि जीवितों के परमात्मा हैं। अगर तुम सोचते हो कि मरे लोग दुबारा जीवित नहीं होते, तब तुम अभी तक कुछ नहीं समझते।"

सब से बड़ी आज्ञा

(मरकुस १२:२८-३४)

जब एक धर्म गुरु इन बातों को सुन रहा था, तब उसने समझा कि यीशु जी ने सदूकियों को सही उत्तर दिया। इसलिये वह आगे बढ़ा और उसने यीशु जी से पूछा, "गुरू जी, मुझे बताओ, सब से बड़ी आज्ञा क्या है?"

यीशु जी ने कहा, "पहली आज्ञा यह है हे इस्राएली लोगों, सुनो, हमारा एक परमात्मा है और वे हमारे प्रभु हैं। हमें अपने परमात्मा को अपने पूरे मन से, पूरे ताकत और पूरी बुद्धि से प्रेम करना चाहिये। दूसरी आज्ञा यह है जैसा प्रेम हम अपने साथ करते हैं, वैसा ही प्रेम हमको अपने पड़ोसी के साथ भी करना चाहिये। इन दोनों से बड़ी और कोई भी आज्ञा नहीं है।"

तब धर्म गुरु ने यीशु जी से कहा, "हे गुरू जी, कितनी अच्छी बात है। तुम ने सच कहा कि एक ही परमात्मा है, उनके अलावा और कोई परमात्मा नहीं है। और हमें उनको अपने पूरे मन से प्रेम करना चाहिये, और जैसा प्रेम जैसा प्रेम हम अपने साथ करते हैं, वैसा ही प्रेम हमको अपने पड़ोसी के साथ भी करना चाहिये। और यह हर प्रकार के बलिदान और भेट चढ़ाने से अधिक जरूरी है।"

जब यीशु जी ने देखा कि वह ठीक कह रहा है, तब उन्होंने उससे कहा, "तुम परमात्मा के रास्ते से दूर नहीं हो।"

और इसके बाद किसी को भी और कोई ऐसा सवाल यीशु जी से पूछने का साहस नहीं हुआ, जिससे वे यीशु जी को फंसाने के इरादे में सफल हों।

दिखावा नहीं करना चाहिये

(मरकुस १२:३८-४४)

फिर बहुत लोग यीशु जी के पास आकर उनकी बात खुश हो कर सुन रहे थे। यीशु जी ने उपदेश देकर कहा, "तुम इन धर्म गुरुओं के जैसा मत करना, क्योंकि ये लम्बे कुर्ते पहनकर इधर-उधर घुमते और बाजार में लोग उनको नमस्कार करें, यह इनको अच्छा लगता है। सत्संग भवनों में आगे से बैठना, और निमंत्रण में आदर के स्वान में बैठना, यह सब उनको अच्छा लगता है। लेकिन ये झूठ बोलकर विधवाओं की सारी सम्पत्ती खुद ले लेते हैं और फिर लोगों को दिखाने के लिये देर तक प्रार्थना करते हैं! लेकिन इन सब कामों के बदले इनको परमात्मा बहुत बड़ी सजा देंगे।"

फिर यीशु जी परमात्मा के मंदिर में जहां दान-पात्र रखा था वहां पर बैठे थे और दान देने वाले लोगों को देख रहे थे। बहुत अमीर लोग अधिक-अधिक दान दे रहे थे। तब एक विधवा ने आकर दो छोटे पैसे दान-पात्र में डाले। यह देखकर यीशु जी ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि दान देने वालों में सब से अधिक इस विधवा ने दिया। क्योंकि सब ने अपनी अधिक कमाई में से थोड़ा दिया, लेकिन इसने अपनी गरीबी में भी इसके पास जितना था सभी दे दिया, और अपने लिये कुछ नहीं बचाया।"

प्रभु यीशु आने वाली मुसीबत के बारे में बता रहे हैं

(मरकुस १३:१-१३)

इसके बाद जब यीशु जी परमात्मा के मंदिर से जा रहे थे तब उनके एक शिष्य ने कहा, “गुरू जी, देखो, परमात्मा के मंदिर और दूसरे घर कितने अच्छे दिख रहे हैं और इनके पत्थर कितने बड़े हैं!” यीशु जी ने कहा, “हां, यह बहुत अच्छे है, लेकिन फिर भी ये सारे नाश हो जायेंगे और तब एक भी पत्थर खड़ा नहीं मिलेगा।”

इसके बाद वे सामने के पहाड़ में गये, और एकांत में जाकर पारस, जयकर, योहन और अन्द्रियास ने यीशु जी से पूछा, “जो आपने परमात्मा के मंदिर के बारे में कहा था, ये कब होगा? ये कैसे पता चलेगा कि यह होने वाला है?”

यीशु जी ने कहा, “सावधान रहो कि तुम किसी के बहकावे में नहीं आओ। क्योंकि बहुत लोग तुम्हारे पास आयेंगे और कहेंगे कि मैं मुक्तिदाता हूं, और तब बहुत लोग उनके बहकावे में आ जायेंगे। जब तुम लड़ाई-झगड़ों की खबर सुनोगे, तब तुम डरना मत, क्योंकि पहले ऐसा होना जरूरी है, लेकिन उस समय दुनिया का अन्त जल्दी नहीं होगा। जाति के विरोध जाति, राज्य के विरोध राज्य खड़े उठैंगे। अनेक स्वानों में बड़े-बड़े भूकम्प आऐगे और जहाँ जहाँ अकाल पड़ेगे। पर ये केवल लोगों के दु:ख तकलीफ की शुरुआत होगी।”

यीशु जी ने फिर कहा, “तुम सावधान रहो, क्योंकि लोग तुम्हारे विरोध में होंगे और तुम को न्यायालय में सौंप देंगे, तुम को सभा में ले जाकर चाबूक मारेंगे और वे मेरे कारण से तुम को राजाओं के सामने भी खड़ा करेंगे। और परमात्मा यह होने देंगे, क्योंकि इस से तुम मेरे बारे में गवाही दोगे। क्योंकि यह आवश्यक है कि दुनिया के अन्त से पहले सारी जातियों को मेरा शुभ संदेश सुनाया जाये।

जब लोग इसलिये कि तुम मेरे शिष्य हो कहकर, तुम को पकड़ कर न्यायालय में ले जायेंगे, तब इस बात की चिन्ता मत करना कि तुम क्या कहोगे, क्योंकि उस समय ईश-आत्मा तुम को बताऐगा कि तुम को क्या कहना है।

सारे लोग तुम से बैर करेंगे, क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो। भाई अपने भाई को, और पिता अपने बेटे को मारने के लिये दे देंगे, और बच्चे अपने माता-पिता को मरवा देंगे। लेकिन जो आखिर तक मुझ में विश्वास रखेगा, वही बचाया

जाऐगा।"

दुनिया के अन्त होने का निशान

(मरकुस १३:१४-३७)

यीशु जी ने फिर कहा, "उस समय एक दुष्ट आदमी परमात्मा के मंदिर में जाकर उसको अशुद्ध करेगा, जिसके कारण परमात्मा अपने घर को छोड़ देंगे।

उस समय जो आदमी यहूदा प्रदेश में होंगे, वे भागकर पहाडों में चले जाना। और जो छत में होंगे, वे लोग अपना कुछ समान को लाने के लिये अन्दर मत जाना, पर वहां से भाग जाना। और जो खेतों में होंगे, वे भागकर अपनी चादर लाने के लिये पीछे घर ना लौटना।

उन औरतों के लिये जो उस समय गर्भवती होंगी और उनके लिये जो बच्चों को दूध पिलाती हैं, उस समय उनके लिये कितना दु:ख का समय होगा!

प्रार्थना करो कि ये सब बरसात के दिनों में ना हो! क्योंकि उन दिनों ऐसा दु:ख कष्ट होगा, जैसा परमात्मा के दुनिया के शुरुआत करे से आज तक ना हुआ और ना कभी होगा। अगर परमात्मा ने उन दिनों को घटाया ना होता, तब कोई भी प्राणी नहीं बचता। लेकिन उन्होंने अपने चुने लोगों के कारण से उन दिनों को घटा दिया था।"

यीशु जी ने फिर बताया, "दुनिया के अन्त से पहले लोग तुम से ऐसा कहेंगे, "देखो, हमारे मुक्तिदाता यहां हैं, या वहां हैं," लेकिन तुम उन पर विश्वास मत करना। क्योंकि ऐसे लोग आयेंगे जो कहेंगे कि मैं मुक्तिदाता हूं, या मैं परमात्मा का दूत हूं, लेकिन तुम उन पर विश्वास नहीं करना। और वे अद्‌भुत काम भी दिखाकर परमात्मा के चुने लोगों को बहकायेंगे, पर वे सफल नहीं होंगे। इसलिये तुम सावधान रहना, क्योंकि मैने तुम को बता दिया कि दुनिया के अन्त से पहले क्या-क्या होगा।

और ऐसा होगा जैसा परमात्मा के सेवक योएल ने कह रखा है,

> "उस समय इस दु:ख-कष्ट के बाद सूरज अन्धकारमय हो जाऐगा, और चन्द्रमा का उजाला भी मिट जाऐगा।
>
> आकाश से तारे गिरने लगेंगे और पूरे ब्रह्माण्ड को झिझोड़ा जाऐगा।"

और मैं जो परमात्मा की ओर से आया हूं, सारे लोग मुझे सामर्थ और महिमा

के साथ बादल में आते देखेंगे। और मैं अपने परम स्वर्गदूतों को भेजकर दुनिया के चारों ओर की दिशाओं से अपने चुने लोगों को जमा करूंगा।"

फिर यीशु जी ने शिष्यों से कहा, "इस अंजीर के पेड़ को देखो और इसे देखकर सीख लो। जैसे उसकी टहनियां कोमल हो जाती हैं और उनमें नये नये अंकुर फूटने लगते हैं, तब तुम समझ जाते हो कि गरमी के दिन नजदीक है, इसी तरह जब तुम ये सारी बातों को होते देखोगे जो मैने तुम को बताई थी तब जान लेना कि मैं नजदीक हूं बल्कि दरवाजे पर हूं। मैं तुम से सच कहता हूं कि इस पीढ़ी का अन्त तब तक नहीं होगा, जब तक ये सब पूरा नहीं हो जाऐगा।[१३] यह आकाश और धरती भी नाश हो जायेगी, पर मेरे वचन कभी खत्म नहीं होंगे, वे हमेशा तक सच रहेंगे।"

यीशु जी ने फिर कहा, "केवल पिता परमात्मा जानते हैं कि मैं धरती में कब वापिस आऊँगा और मैं उनका पुत्र भी इसके बारे में कुछ नहीं जानता, और न कोई परम स्वर्गदूत जानते हैं।

सावधान रहो और सोना मत क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आयेगा। ऐसा है जैसे कोई आदमी अपना घर छोड़ कर विदेश चला जाता है। वह अपने घर का भार अपने दासों को सौंप जाता है और हर एक को उनका काम बता जाता है, और चौकीदार को उठे रहने की आज्ञा दे जाता है।

तब तुम भी उन दासों के जैसे अपनी आँखों को खुला रखना और मैं जो तुम्हारा प्रभु हूं, मेरा इंतजार करना क्योंकि तुम नहीं जानते कि मैं परम स्वर्ग जाकर दिन में या रात को कब वापिस आऊँगा। इसलिये तुम जागते रहो, क्योंकि कही ऐसा नहीं हो कि मैं अचानक आ जाऊं और तुम को सोया पाऊं।

जो बात मैने तुम से कह रखी थी वही फिर मैं सब से कहता हूं, कि सोना मत उठे रहो।"

एक औरत प्रभु यीशु में इत्र लगा रही है

(मरकुस १४:१-११)

उस समय यहूदी लोग अपने पूर्वजों के मिस्रियों की गुलामी से आजाद होने

---

१३ यीशु के परमेश्वर का इस प्रचार करने के लगभग सैंतीस वर्ष के बाद रोमियों के सैनिकों ने पूरे यरुशलेम नगर और परमेश्वर के भवन को नांश कर दिया। यीशु की भविष्यबाणी एक बार उस समय पूरी हुई और फिर दुबारा उस समय पूरी होगी जब वे इस दुनिया में फिर सब का न्याय करने के लिये वापिस आयेगे।

की यादगारी में हर वर्ष फसह नाम का एक त्यौहार मनाया करते थे। जब त्यौहार के दो दिन बचे थे, तब पुरोहितों के साहब और धर्म गुरु यीशु जी को चुप-चाप से पकड़ कर उनको मारने की तरकीब सोचने लगे। फिर भी वे ऐसा कहते थे, "त्यौहार के दिनों में नहीं, क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि लोग हमारे साथ दंगा-फसाद करें।" क्योंकि बहुत लोग यीशु जी को अच्छा मानते थे।

उस समय जब यीशु जी बैतनिया गाँव में अपने शिष्यों के साथ किसी के घर में खाना खा रहे थे, तब एक औरत बहुत महंगा इत्र ले कर वहां आई। और उसने वह सब यीशु जी के सिर में अपने प्रेम को दिखाने के लिये डाल दिया।

लेकिन जो लोग वहां थे उनमें से कुछ लोग यह कहने लगे, "इसने इस इत्र को बरबाद क्यों किया? यह इत्र बहुत अनमोल था और इसे बेचकर उन पैसों को गरीबों में बांटा जा सकता था।" और उन्होंने यह कहकर उस औरत को डाँटा।

लेकिन यीशु जी ने उन से कहा, "तुम इसको परेशान क्यों कर रहे हो? इसको छोड़ दो, क्योंकि इसने मेरे लिये अच्छा काम कर रखा है। गरीब तो तुम्हारे साथ हमेशा रहते हैं। जब भी तुम चाहोगे तुम उनकी मद्द कर सकते हो, पर मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहुंगा। जो भी यह कर सकती थी इसने वही किया। उसने मेरे मरने से पहले मुझे दफनाने के लिये मेरे तन में खुशबू लगा ली है। मैं तुम से सच कहता हूं, सारे दुनिया में जहां भी मेरा शुभ संदेश सुनाया जाऐगा, वहां इसकी याद में जो भी इसने किया इसका जिक्र पक्का होगा!"

तब यह देखकर यहूदा करियोती जो उनके बारह शिष्यों में से एक था, वह पुरोहितों के साहबों के पास गया और यीशु जी को पकड़ा देने का वायदा कर आया। वे यह बात सुनकर खुश हुए और उन्होंने उसको धन देने का वादा किया। और यहूदा यीशु जी को पकड़वाने के मौके में लग गया।

शिष्य त्यौहार की तैयारी कर रहे हैं

(मरकुस १४:१२-१६)

त्यौहार के पहले दिन, जब एक भेड़ के छोटे-छोटे से बकरे को चढ़ाया जाता था, उसकी तैयारी के लिये शिष्यों ने यीशु जी से पूछा, "हम कहां जाकर त्यौहार खाने के लिये तैयारी करें?"

तब यीशु जी ने दो शिष्यों को यह कहकर भेजा, "यरुशलेम नगर में जाओ।

वहां तुम को एक आदमी मिलेगा जो एक पानी से भरे घड़े को ले जा रहा होगा, तुम उसके पीछे-पीछे जाना। जिस घर में वह जाऐगा, उस घर के मालिक से तुम ऐसा कहना कि गुरु जी ने पुछवा रखा है कि मेरे लिये वह जगह कहां है, जहां मैं अपने शिष्यों के साथ त्यौहार मनाऊँगा? और वहां तुम को वहीं ऊपर एक सजा-सजाया कमरा दिखायेगा। तुम वहीं हम सब के लिये त्यौहार मनाने की तैयारी करना।" यह सुनकर शिष्य चले गये और जैसे ही यीशु जी ने उन से कह रखा था उन्होंने यरुशलेम नगर में जाकर सब चीज ठीक वैसा ही पाया। और उन्होंने वहां त्यौहार खाने के लिये तैयारी की।

प्रभु यीशु और शिष्य त्यौहार मना रहे हैं

(मरकुस १४:१७-२६)

जब शाम होने लगी तब यीशु जी अपने बारह शिष्यों के साथ उस घर में पहुंचे जहां त्यौहार खाने के लिये तैयारी कर रखी थी। और जब वे खाना खा रहे थे, तब यीशु जी ने उनसे कहा, "तुम सब मेरे साथ खा रहे थे, लेकिन मैं सच कहता हूं कि तुम में एक ऐसा है जो मुझे पकड़वायेगा।" यीशु कि यह बात सुनकर शिष्य उदास हो पड़े और एक-एक करके उनसे पूछने लगे कि कही वह मैं तो नहीं हूं? यीशु जी ने उत्तर दिया, "सच में तुम सब में से एक मुझे पकड़वायेगा, जो अभी मेरे साथ खाना खा रहे हो। मैं जो परमात्मा की ओर से आया हूं, मेरा हाल तो वैसा ही होगा, जैसा मेरे बारे में लिख रखा है, लेकिन धिCकार है उस आदमी के लिये जो मुझे पकड़वायेगा। इस से अच्छा उसके लिये यह था कि वह आदमी पैदा ही नहीं होता।" जब वे खाना खा रहे थे उस समय यीशु जी ने रोटी पकड़ी और आशीष मांगकर तोडी और अपने शिष्यों को देकर कहा, "लो, यह रोटी है जिसको तुम मेरा तन समझ कर खाना।" फिर उन्होंने कटोरे को उठाकर परमात्मा को धन्यवाद देकर उसको शिष्यों को दिया और सब ने उस में से बारी-बारी से पिया। उन्होंने कहा, "तुम जो यह अंगूर का लाल रस पी रहे हो इसको मेरा खून समझना जिसको मैं बहुत लोगों की जान को बचाने के लिये बहानेवाला हूं। क्योंकि मेरी मौत से परमात्मा लोगों के साथ अपना एक नये वायदे को साबित कर रहे हैं। मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं अंगूर का रस तब तक दुबारा कभी नहीं पिऊँगा, जब तक कि मैं परमात्मा के राज्य में जाकर न पी लूं।"

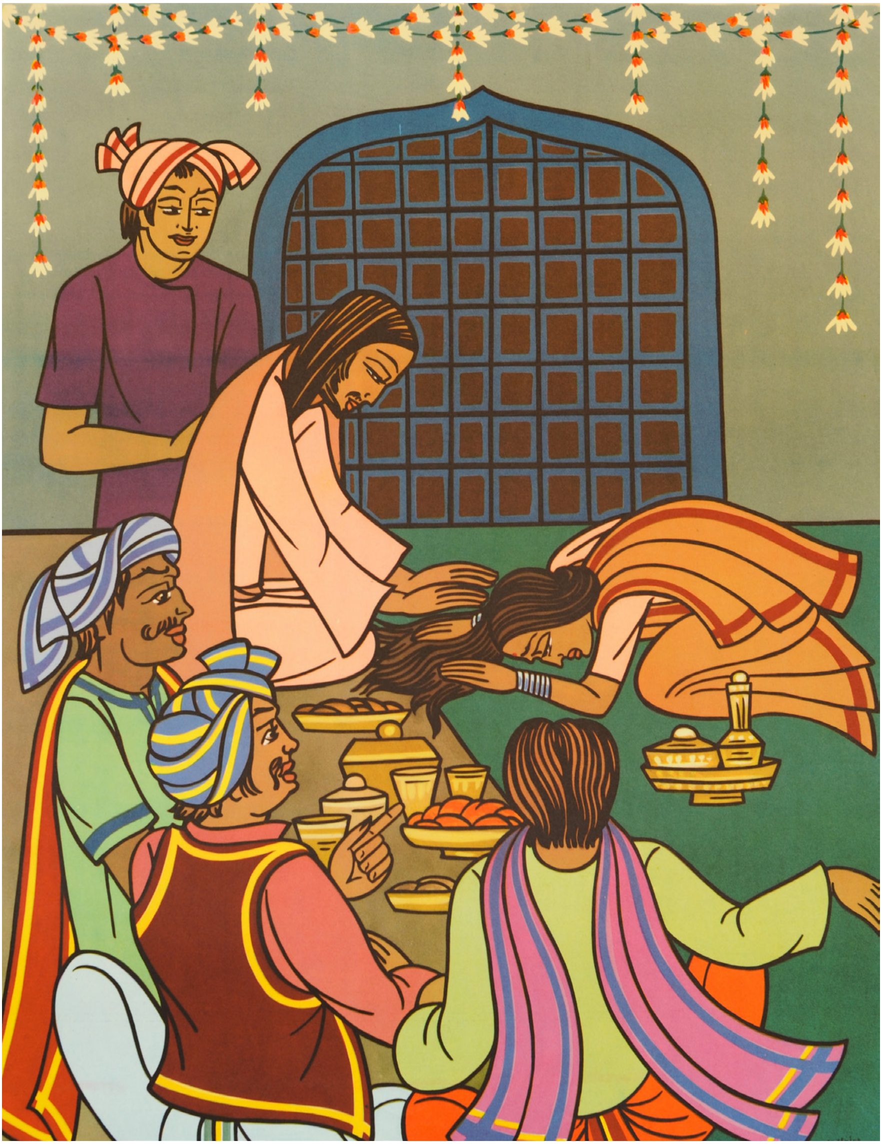

तब भजन गाने के बाद यीशु जी और उनके शिष्य जैतून नाम के पहाड़ में चले गये।

शिष्य प्रभु यीशु को छोड़ देंगे

(मरकुस १४:२७-३१)

चलते-चलते यीशु जी ने अपने शिष्यों से कहा, "तुम सब का विश्वास भी जाता रहेगा, क्योंकि धर्म-ग्रंथ में ऐसा लिख रखा है कि मैं चरवाहे को मार दुंगा और भेड़ इधर-उधर भटक जायेंगे। लेकिन जीवित करे जाने के बाद मैं तुम सब से पहले गलील प्रदेश को जाऊँगा।"

पारस ने यीशु जी से कहा, "गुरू जी, आपने कहा कि हम सबका विश्वास जाता रहेगा। और सब का विश्वास जाऐगा तो जाऐगा, लेकिन मेरा विश्वास बिल्कुल नहीं जाऐगा!" यह सुनकर यीशु जी ने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज रात मुर्गे के दो बार बांग देने से पहले, तू तीन बार अपने मुँह से मेरा इन्कार करेगा।" लेकिन पारस ने और भी अधिक जोर देकर कहा, "चाहे मुझे तुम्हारे साथ मरना भी पड़ेगा, तब भी मैं तुम्हारा इन्कार बिल्कुल नहीं करूंगा।" और सब ने भी ऐसा ही कहा।

प्रभु यीशु दुःखी हो कर प्रार्थना कर रहे हैं

(मरकुस १४:३२-४२)

यीशु जी और शिष्य गतसमनी नाम के बगीचे में आये। यीशु जी ने अपने शिष्यों से कहा, "जब तक मैं प्रार्थना करता हूं, तुम यहां रुको।"

यीशु जी पारस, जयकर और यहूना को अपने साथ ले गये। उस समय यीशु जी बहुत उदास और घबराये थे। उन्होंने शिष्यों से कहा, "मैं इतना अधिक दुःखी हूं कि मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरे प्राण जाने वाले हैं। इसलिये तुम यहां रुको और सोना मत।"

वे थोड़ा आगे गये और जमीन में गिरकर प्रार्थना करने लगे कि अगर हो सके तब यह मुसीबत मेरे सामने से टल जाये। उन्होंने कहा, "हे पिता, तुम्हारे लिये कुछ भी मुश्किल नहीं हैं। यह दुःख-मुसीबत कि असहनीय पल को मुझ से दूर कर दीजिये। फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तुम्हारी इच्छा पूरी हो।"

फिर यीशु जी अपने शिष्यों के पास वापिस आये और उन्होंने उनको सोया देखकर पारस से कहा, “हे शमौन पारस, क्या तू सो रहा है? क्यों तू घंटाभर भी उठा नहीं रह सकता था? तुम सभी उठे रह कर प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में ना पड़ो। तुम्हारी आत्मा तो अच्छा करने के लिये तैयार है, लेकिन तुम्हारे पास यह शुक्ति नहीं है कि तुम आत्मा की बात को पूरा कर सके।”

उन्होंने फिर जाकर दुबारा वही प्रार्थना की जो उन्होंने पहले की थी। वापिस आने पर उन्होंने अपने शिष्यों को और सोया हुआ पाया क्योंकि उनकी आँखों में नींद भरी थी। उठकर शिष्यों के समझ में यह नहीं आया कि वे यीशु जी को क्या उत्तर दें।

यीशु जी जब तीसरी बार शिष्यों के पास आये, तब उन्होंने उन से कहा, “अभी तक सोये हुए हो और आराम ही कर रहे हो? बस, अब बहुत हो गया है। वह समय आ गया है कि मैं जो परमात्मा के तरफ से आया हूं पापियों के हाथ पकड़ाया जा रहा हूं। उठो, हम चलते हैं, क्योंकि मेरा पकड़वाने वाला नजदीक आ गया है।”

प्रभु यीशु पकड़े जा रहे हैं

(मरकुस १४:४३-५०)

जब यीशु जी ऐसा कह रहे थे, उस समय यहूदा करियोती वहां आया। उसके साथ लाठी-तलवार लेकर एक भीड़ भी थी, जिन को पुरोहितों के साहब, धर्म गुरुओं ने और प्रधानों ने भेज रखा था। यहूदा ने उनको यह बता रखा था कि जिसको मैं गले से लगाऊँगा, वही यीशु जी होंगे। तुम उनको पकड़ कर अच्छे से ले जाना। यहूदा ने सीधे यीशु जी के पास जाकर कहा, “गुरू जी!” और उसने उनको गले से लगाया। यीशु जी के साथियों ने यह देखकर कि क्या होने वाला है, उनसे कहा, “प्रभु! क्या हम इनमें हम्ला करें?” और उनमें से एक ने महापुरोहित के नौकर का कान एक बड़े चाकू से उड़ा दिया, पर यीशु जी ने कहा, “नहीं, नहीं, बहुत हो गया है।” और उन्होंने उसका कान छूकर अच्छा कर दिया। फिर यीशु जी ने भीड़ से कहा, “मैने क्या अपराध कर रखा है कि तुम मुझे पकड़ने के लिये लाठी-तलवार ले कर आये हो? जब मैं रोज परमात्मा के मंदिर में उपदेश देते तुम्हारे साथ था, तब तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। पर अब यह इसलिये हो रहा है कि परमात्मा के वचन पूरे हों।” तब उन्होंने यीशु जी को

पकड़ कर अपने कब्जे में कर लिया। पर उनके शिष्य उनको छोड़ कर भाग पड़े।

प्रभु यीशु यहूदी न्यायालय के सामने

(मरकुस १४:५३-६५)

वे यीशु जी को महापुरोहित के पास ले गये। वहां दूसरे पुरोहितों के साहब, धर्म गुरु और प्रधान पहले से जमा थे।

यीशु जी से थोड़ा दूर-दूर रह कर पारस महापुरोहित के दरबार के आंगन तक गया और वहां पहरेदारों के साथ बैठकर आग सेकने लगा।

महापुरोहित और सारे यहूदी न्यायालय के सदस्य यीशु जी को मरवाने के विचार से उनके खिलाफ गवाही की तलाश में लगे थे, पर वह नहीं मिली। बहुत लोगों ने तो उनके खिलाफ झूठी गवाही भी दी पर उनके बयान आपस में मेल नहीं खा रहे थे।

तब कुछ लोग उठे और उन्होंने यीशु जी के खिलाफ यह झूठी गवाही दी, ”हमने इस आदमी को ऐसा कहते सुन रखा है कि मैं इस हाथ के बनाये परमात्मा के मंदिर को तोड़कर तीन दिन के अन्दर इसके बदले एक दूसरा मंदिर बना दूँगा जो कि हाथ से बना नहीं होगा।” लेकिन इन बातों के बारे में भी उनके बयान एक से नहीं थे

उसके बाद महापुरोहित ने खड़े होकर यीशु जी से पूछा, “यह तुम्हारे विरोध में जो गवाही देते है, क्या तेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है?” पर यीशु जी चुप रहे और उन्होंने कुछ नहीं कहा। फिर महापुरोहित ने यीशु जी से पूछा, “क्या तू सच में मुक्तिदाता और परम आराध्य परमात्मा का पुत्र हैं?” यीशु जी ने उत्तर दिया, “हां, मैं वही हूं। और तुम मुझे सर्व शुक्तिमान परमात्मा के दाहिने तरफ बैठा और बादलों में दुबारा आते देखोगे।”

यह सुनकर महापुरोहित ने गुस्से से अपने शरीर के कपड़े फाड़कर कहा, “अब हमको और किसी भी गवाह की कुछ जरूरत नहीं है। हम ने खुद परमात्मा की बुराई अपने कानों से सुनी हैं! अब बताओ कि तुम सबकी इसके बारे में क्या राय है?” तब उन सबका यह फैसला हुआ कि यीशु जी को प्राण दंड मिलना चाहिये।

तब कुछ लोग यीशु जी पर थूकने, उनकी आँखों में पट्टी बाँध कर उनको घूसे मारने, और पुछने लगे कि बता, तुझे किसने मारा? और सिपाहियों ने भी यीशु जी को थप्पड़ मारे।

पारस का प्रभु यीशु का इन्कार

(मरकुस १४:६६-७२)

इसी बीच जब पारस आंगन में बैठा था, जब महापुरोहित की एक नौकरानी वहां आई। जब उसने पारस को वहां आग सेकते देखा, तब बहुत ध्यान से उसको देखकर कहा, “तू भी तो उस नासरत गाँव के यीशु का साथी हैं।” यह सुनकर पारस ने कहा, “मैं नहीं जानता कि तू क्या कह रही है।” यह कहते-कहते पारस दरवाजे तक पहुंचा था, तब उसी समय मुर्गे ने बांग दी। इसके थोड़ी देर बाद जब उस नौकरानी ने पारस को दुबारा वहां देखा, तब उसने फिर कहा, “यह आदमी भी उनमें से एक है।” पारस ने दुबारा फिर यीशु जी का इन्कार करके कहा, “नहीं, नहीं, मैं इस आदमी के साथ तो दूर इसे जानता भी नहीं हूं।”

तब थोड़ी देर बाद वहां खड़े हुए लोगों ने पारस से कहा, “यह बात पक्की है कि तू भी यीशु के साथियों में से एक हैं, क्योंकि तू भी गलीली हैं। इसका अंदाजा हमने तुम्हारी भाषा से लगाया है।”

उसके बाद पारस उनके सामने परमात्मा की ये कसम खाने लगा, “मैं उस आदमी को नहीं जानता जिसके बारे में तुम कह रहे हो!” उसी समय मुर्गे ने दुसरे बार बांगदी। तब पारस को यह बात याद आई जो यीशु जी ने उससे कह रखी थी कि आज मुर्गे के दो बार बांग देने से पहले तू मेरा तीन बार इन्कार करेगा। तब पारस को बहुत दु:ख हुआ कि मैने यह क्या किया, और वह जोर-जोर से रोने लगा।

प्रभु यीशु राज्यपाल के सामने

(मरकुस १५:१-20)

जैसे ही सुबह हुई, तब न्यायालयों के लोग आपस में बात करने लगे कि हम यीशु में दोष कैसे लगा सकते हैं। तब वे उनको बांध कर रोमी राज्यपाल पिलातुस के पास ले गये और उन्होंने उसको बताया, “यह अपने को यहूदियों

का राजा बताता है !" तब पिलातुस ने यीशु जी से पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा हैं?" यीशु जी ने कहा, "जैसा तुम कह रहे हो, ऐसा ही है।" फिर पुरोहितों के साहब ने यीशु जी में बहुत अधिक झूठे दोष लगाये।

तब पिलातुस ने यीशु जी से कहा, "तू उत्तर क्यों नहीं दे रहा है? देख, ये कितनी बातों के बारे में तुझ में दोष लगा रहे हैं!" फिर भी यीशु जी ने उसको कोई उत्तर नहीं दिया। यह देखकर पिलातुस को बड़ा ताज़ूब हुआ।

इस त्यौहार के मौके में पिलातुस एक कैदी को उनके लिये छोड़ देते थे। अभी बरअब्बा नाम का एक कैदी दंगा-फसाद करने वाले लोगों के साथ कैद खाने में बन्द था जिसने दंगे फसाद में खून किया था। तब लोग पिलातुस के पास आये और उससे विनती करके कहने लगे, "जैसा तुम ने आज तक हमारे लिये कर रखा है, वैसा ही अभी भी करें।" पिलातुस ने उन से पूछा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यीशु जिसको तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको छोड़ दूं?" पिलातुस ने ऐसा इसलिये कहा क्योंकि वह जानता था कि पुरोहितों के साहब ने चिढ़कर यीशु जी को पकड़ा था।

लेकिन पुरोहितों के साहब ने लोगों को भड़का रखा था कि यीशु जी को नहीं पर बरअब्बा को हमारे लिये छोड़ दीजिये, और सब लोगों ने ऐसा ही कहा। यह सुनकर फिर पिलातुस ने उनसे पूछा, "जिसको तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसका मैं क्या करूं? बताओ, तुम क्या चाहते हो?" उन्होंने चिल्लाकर कहा, "उसको मारने के लिये क्रूस में टांग दो!" तब पिलातुस ने उन से पूछा, "क्यों, इस ने क्या गलती कर रखी है?" लेकिन लोगों ने और भी अधिक जोर से चिल्लाकर कहा, "उसको क्रूस में टांग दो!"[१४]

पिलातुस भीड़ को खुश करना चाहता था और इसलिये उसने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया। और यीशु जी को कोड़े की अति मार लगवाकर क्रूस में चढ़ाने के लिये सैनिकों के हाथ में दे दिया।

तब सैनिक यीशु जी को रोमी राज्यपाल के महल के बाहर से आंगन में ले गये और उन्होंने अपनी पूरी पलटन को वहां बुला लिया। और उन्होंने यीशु जी को बैंगनी रंग के कपड़े पहनाये जैसा एक राजा पहनता था और कांटों का

---

१४ जब रोमी कोई आदमी को मौत की सजा देते थे, तब वे उसको क्रूस में लटकाते थे। क्रूस दो लकड़ी में कील ठोक कर बनता था। सैनिक कसूरवार के हाथ और पैरों में कील ठोक कर उसको इस क्रूस में लटका देते थे। और जब तक वह नहीं मर जाता था तब तक उसको वही लटकाया जाता था। मौत का ये एक भयंकर रूप था। ये सजा विशेष कर चोर और खूनियों को दी जाती थी।

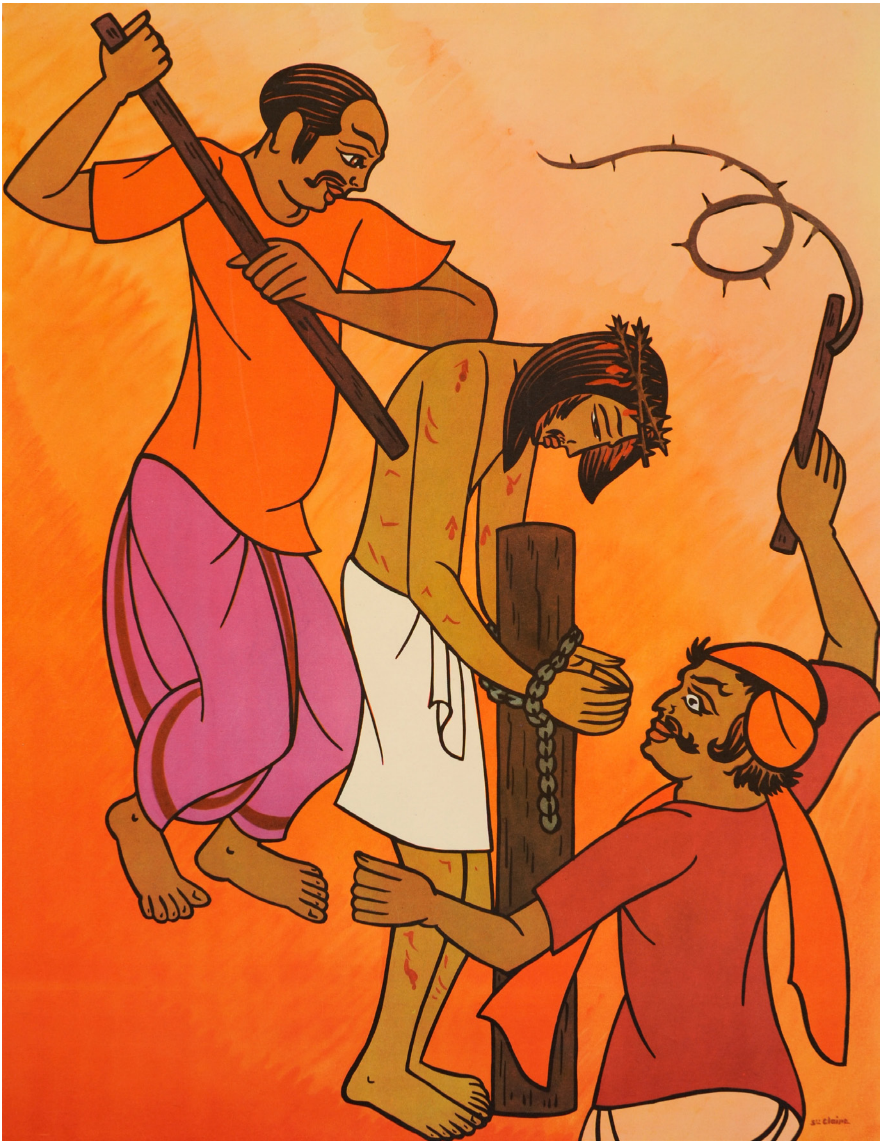
Sr. Claire

एक मुकुट बनाकर यीशु जी के सिर पर रख दिया। और वे मजाक से यीशु जी को सलामी देने लगे और यह कहने लगे, “हे, यहूदियों के राजा जी, तुम को हमारा नमस्कार है!” और वे यीशु जी के सिर में लकड़ी के डन्डे से मार रहे थे और उनमें थूक रहे थे और फिर मजाक से घुटने टेक कर उनके आगे से प्रणाम कर रहे थे। जब उन्होंने जमकर उनका मजाक उढ़ा लिया था तब उनके बैंगनी कपड़े को उतार कर उनको उन्ही के कपड़े पहनाये। और फिर उनको क्रूस में चढ़ाने के लिये वहां से बाहर लाये।

प्रभु यीशु का क्रूस में चढ़ाया जाना

(मरकुस १५:२१-३२, लूका २३:३९-४३)

सैनिक यीशु जी को क्रूस में चढाने के लिये नगर के बाहर ले जा रहे थे। उस समय कुरेनी शमौन नाम का एक आदमी यरुशलेम जाकर उस रास्ते से आ रहा था। सिपाहियों ने उसको पकड़ा और यीशु जी के क्रूस को ले जाने के लिये मजबूर कर दिया। और वे यीशु जी को गुलगुता नाम के स्वान में ले गये जिसका अर्थ है खोपड़ी के जैसा स्वान। वहां सैनिक अंगूर के रस में दवाई रख कर यीशु जी को देने लगे, ताकि वे कील ठोकने पर कष्ट कम महसूस करे, पर उन्होंने नहीं पिया। उसके बाद उन्होंने उनको कील ठोक कर क्रूस में टांग दिया।

और उनके कपड़ों को आपस में बांटने के लिये कि किस को क्या मिलेगा करके पर्चि डालकर आपस में बांट लिये।

जब उन्होंने यीशु जी को क्रूस में चढ़ाया, उस समय सुबह के नौ बजे थे। उन्होंने उनके क्रूस में यह दोषपत्र टांग दिया कि यह यहूदियों का राजा है। और उनके साथ दो डाकू भी अलग-अलग क्रूस में चढ़ा रखे थे, एक को दाहिने ओर और दूसरे को बाये ओर।

जब यीशु जी के पास से लोग जा रहे थे, तब वे सिर हिला हिलाकर कह रहे थे, “अरे वाह, तू तो वही हैं जो ऐसा कह रहा था कि मैं परमात्मा के मंदिर को तोड़कर फिर तीन दिन में तैयार कर दुंगा। पर तू अभी क्रूस से उतरकर अपने को बचा!” और इसी तरह पुरोहितों के साहब और धर्म गुरुओं ने भी यीशु की हंसी की। और वे आपस में कहने लगे, “इसने दूसरों को बचाया, क्या यह अपने को नहीं बचा सकता है? अगर यह मुक्तिदाता है और सच में यहूदियों के राजा है, तब वह क्रूस से नीचे उतर आयेगा। तब हम विश्वास करेंगे कि वह

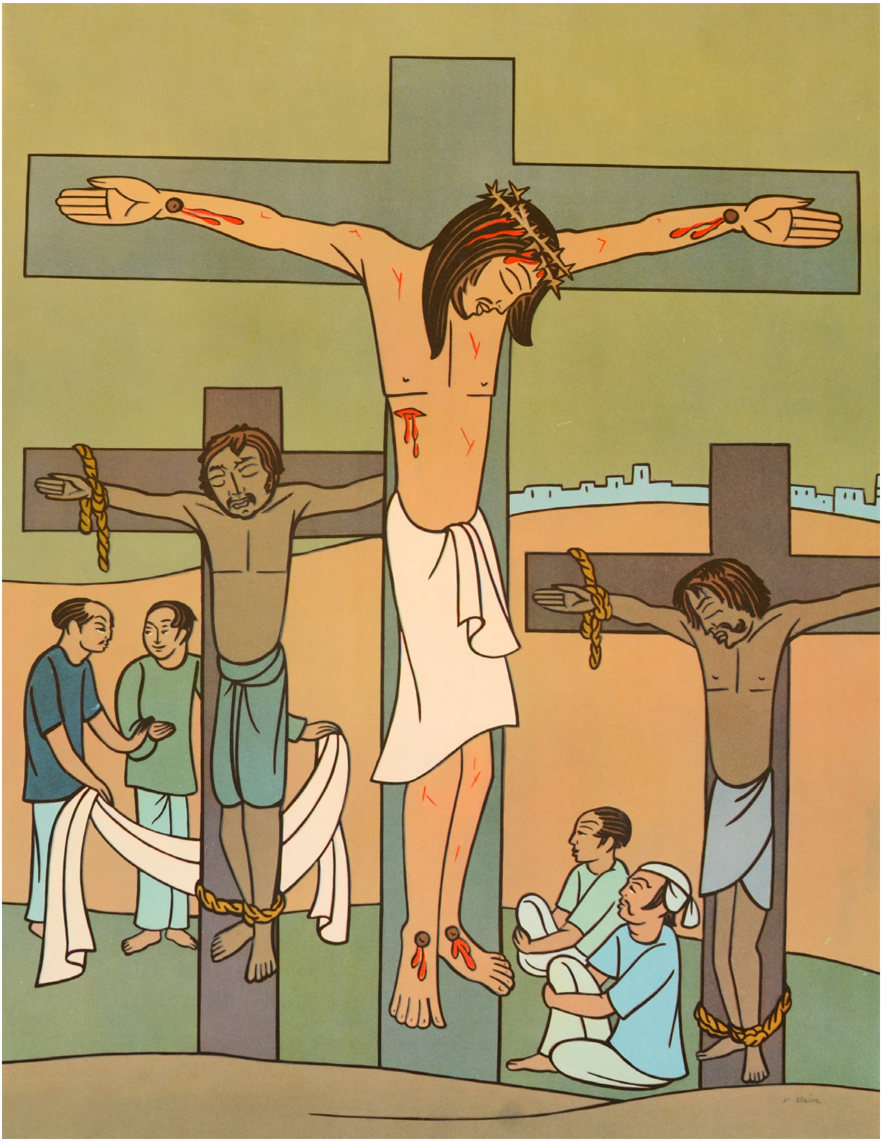

परमात्मा का भेजा जन है!"

यीशु जी के बगल में लटकाया एक डाकू यीशु जी से कहने लगा, "तू मुक्तिदाता है, ना? अभी तू अपने को इस क्रूस से बचा, और हमको भी!" लेकिन दुसरे डाकू ने उसे डांटकर कहा, "क्या तू परमात्मा को देखकर नहीं डरता? हमको हमारी करनी की सही सजा मिल रही है, लेकिन इन्होंने कोई भी अपराध नहीं किया है।" यह कहकर उसने यीशु जी से कहा, "यीशु जी, जब आप अपने राज्य में आओगे, तब आप मुझे न भूलना।" तब यीशु जी ने उससे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, तू आज ही मेरे साथ स्वर्ग में होगा।"

प्रभु यीशु कि मौत

(मरकुस १५:३३-४१, मती२७:४९)

दिन दोपहर में पूरी दुनिया में अंधेरा हुआ और तीन बजे तक रहा। तब तीन बजे यीशु जी ने अपनी भाषा में जोर से पुकारा, "एलोई, एलोई, लमा सबकतानी?" जिसका अर्थ है, "हे मेरे परमात्मा, हे मेरे परमात्मा, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?" यह सुनकर सामने खड़े हुए कुछ लोगों ने कहा, "देखो, यह परमात्मा के सेवक एलियाह को पुकार रहा है।" इतने में उन में से एक पनसोख्ता लगाये डंडा लेकर आया और उसको सिरके में डुबाकर यीशु जी को चूसाने के लिये ले कर गया। तब दूसरे ने कहा, "रहने दो, अभी हम देखते है कि एलियाह इसे बचाने के लिये आता है या नहीं आता!" इसके बाद यीशु जी के मुंह से जोर की अवाज निकलने के बाद उन्होंने अपने प्राण छोड़ दिये।

तब यरुशलेम में परमात्मा के मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गये।

जो रोमी सेनापति यीशु जी के सामने खड़ा हुआ था, उसने उनका ऐसे मरने को देखकर कहा, "सच में यह आदमी परमात्मा का पुत्र था!"

कुछ औरतें दूर खडी होकर देख रहीं थीं। जिसमें मर्म मगदलीनी, सलोमी, और छोटे जयकर और योसेस कि मां मर्म थी। जब यीशु जी गलील में थे तब ये औरतें उनके साथ जाती थी और उनकी सेवा करती थी। और वहां और भी बहुत औरतें थीं जो यीशु जी के साथ यरुशलेम तक आये थी।

प्रभु यीशु का दफनाया जाना

(मरकुस १५:४२-४७)

अभी शाम हो गयी थी और यह विश्राम के दिन से पहले का दिन था। वहां एक आदमी था जिसका नाम जोश था। वह यहूदी न्यायालय का इज़्जतदार आदमी था जो परमात्मा के राज्य की बहुत इंतजारी में था। वह साहस करके राज्यपाल पिलातुस के सामने गया और उसने उससे यीशु जी की लाश मांगी। यह सुनकर पिलातुस चौंक पड़ा कि वह इतनी जल्दी मर गया। तब उसने सेनापति को बुलाकर पूछा कि यीशु जी को मरे कितना समय हो गया है? तब सेनापति से यह खबर पाकर कि यीशु जी सच में मर गया है, तब पिलातुस ने जोश को उसकी लाश दिलवा दी।

तब जोश ने एक कफन खरीदा और यीशु जी को क्रूस में से उतारा। और उसने उनको कफन में लपेटकर एक बन्द गुफा में खुदी कब्र में रख दिया और कब्र के दरवाजे में एक बड़ा पत्थर लगा दिया।[१५]

और मर्म मगदलीनी और योसेस कि मां मर्म यह देख रही थी की उनको कहां रख रहे हैं। और उसके बाद वे घर जाकर उनमें लगाने के लिये मशाले और खुशबुदार इत्र तैयार करने लगे।

कब्र में पहरेदार

(मती २७:६२-६६)

दूसरे दिन विश्राम का दिन था। पुरोहितों के अधिकारियों ने और धर्म गुरुओं ने एक साथ पिलातुस के महल में जाकर उससे कहा, “महाराज, हमको याद है, कि उस धोखे बाज यीशु ने अपने जीवित रहते कह रखा था, कि मैं तीसरे दिन जिन्दा होऊँगा। इसलिये, महाराज, कब्र में तीसरे दिन तक हिफाजत करने का आदेश दिया जाय। कहीं ऐसा नहीं हो कि उसके चेले आकर उसकी लाश को छिपा दें, और सब लोगों से कहें कि वह मरे हुओं में से जीवित हो गये हैं। यह उसकी पहले की शिक्षा से भी अधिक खतरनाक होगा!”

---

१५ उस समय यह एक आम रिवाज थी कि वे मरने के बाद लाश को एक बन्द गुफा में रख कर दफना देते थे।

यह सुनकर पिलातुस ने उनसे कहा, "ठीक है, तुम पहरेदार ले जाओ और जैसा भी अच्छा समझते हो उसकी हिफाजत की तैयारी करो।" इसलिये उन्होंने कब्र के मुंह पर रखे पत्थर में मुहर लगायी और चौकीदार बैठाकर वह कब्र की सुरक्षा करने लगे।

प्रभु यीशु जीवित होते हैं

(मती २८:१-१०, मरकुस १६:१-८, लुका २४:१०-११, यूहना २०:३),

दूसरे दिन सुबह ही एक बड़े भूकंप के साथ परमात्मा का एक स्वर्गदूत यीशु जी के कब्र में आया, और वह कब्र के बड़े पत्थर को हटाकर उसमें बैठ गया। उसका मुंह चमकदार और कपड़े सफेद थे। जब पहरेदारों ने यह सब देखा वे डर से मरे आदमी की तरह हो गये।

उस समय मर्म मगदलीनी और कुछ दूसरी महिलायें खुशबुदार इत्र लेकर कब्र में आ रहे थीं कि यीशु जी के लाश में लगाऐंगे वे रास्ते में आपस में यह बात कर रही थीं, "हमारे लिये कब्र के बड़े पत्थर को कौन हटाऐगा?"

लेकिन जब वे वहां पहुंचीं, तब उन्होंने देखा कि द्वार का बड़ा पत्थर हटा है! और वे कब्र के अन्दर गईं और यह देखकर वे डर पड़ी कि सफेद रंग के कपड़े पहने जवान दाहिने ओर बैठा है।

तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत, मैं जानता हूं कि तुम यीशु जी को ढूंढ़ रही हो जिनको क्रूस में चढा रखा था। वे यहां नहीं हैं, वे जीवित हो गये हैं! जैसा उन्होंने कह रखा था, वैसा ही हुआ। देखो, आप अच्छी तरह देख लो। यह वही जगह है जहां उनको रख रखा था। जल्दी जाकर यह बात सब शिष्यों को बताना। और उनसे कहना कि तुम से पहले वे गलील जायेंगे, वहां तुम उनको देखोगे।" तब वे महिलायें खुशी से दौड़ती शिष्यों के पास जाने लगी।

जब वे रास्ते में थी, तब इन्होंने अचानक यीशु जी को देखा, और दौड़-दौड़कर उनके पैरों में गिर पड़ीं। और यीशु जी ने उनसे कहा, "तुम डरो मत! जाकर मेरे शिष्यों से कहना कि गलील को जाओ, वहां वे मुझे देखेंगे।"

और औरतों ने दौड़ कर शिष्यों के पास जाकर कहा, "यीशु जी जीवित हो गये हैं, हमने उनको देखा और उन्होंने हमारे साथ बात-चीत भी की!" लेकिन

शिष्यों ने उनसे कहा, “तुम सब पागल हो गयी हो!” तब भी पारस और योहन दौड़ कर कब्र में गये कि वहां क्या हुआ करके। जब उन्होंने वहां पहुंचकर यीशु जी में डाला कफन के अलावा कुछ नहीं देखा, तब वे चकित हो गये और लौटकर वापिस आ गये।

पुरोहितों की झूठी योजना

(मती २८:११-१५)

औरतों के जाने के बाद, कब्र के पहरेदारों ने नगर में पुरोहितों के अधिकारियों के पास जाकर उनको बताया कि क्या क्या हुआ। तब पुरोहितों के अधिकारियों ने और प्रधानों ने मिलकर यह फैसला किया कि पहरेदारों को रुपये देकर उनसे कहेंगे, “तुम लोगों से ऐसा कहना, कि जब हम रात में सोये थे तब यीशु जी के चेले आये और यीशु जी की लाश को चुरा ले गये। और अगर यह बात राज्यपाल के कानों तक पहुंच जायेगी, तब हम उनको समझा देंगे और तुमको इस मुसीबत से बचा लेंगे।” तब उन्होंने रुपये लेकर वैसा ही किया जैसा उनसे कह रखा था। और उन्होंने ये बातें यहूदियों में फैला दी।

शिष्यों के साथ प्रभु यीशु की मुलाकात और खाना

(यहूना २०:१९, लुका २४:३७-४५)

इसके बाद जब शाम के समय चेले यहूदियों के नेताओं के डर से घर के अन्दर कुन्डी लगाकर बातें कर रहे थे, तब अचानक यीशु जी उनके बीच में आये और उनसे कहा, “तुम को शांति मिले!” वे यीशु जी को देखकर चकित हो कर सोचने लगे की कहीं ये कोई भूत तो नहीं है? यीशु जी ने उनसे कहा, “तुम सारे क्यों डर रहे हो? तुम को भ्रम क्यों हो रहा है? मेरे हाथ और पाँव देखो, मैं हूं। मुझ में हाथ लगाकर देखो कि मैं ही हूं, क्योंकि भूत में हड्डियां और मांस नहीं होता है, जैसा तुम मुझ में देख रहे हो।” ऐसा कहकर यीशु जी ने अपने हाथ और पाँव दिखाये।

यह सब देखकर उनको आनंद के मारे विश्वास न हो रहा था और वे दंग होकर देखे रह गये। तब यीशु जी ने कहा, “क्या तुम्हारे पास यहां खाने के लिये कुछ है?” उन्होंने उसे मछली का एक टुकडा दिया, और यीशु जी ने उनके सामने यह खाया।

फिर यीशु जी ने उनसे कहा, "जब मैं तुम्हारे साथ था, तब मैने कह रखा था, की धर्म-ग्रंथ में मेरे बारे में जो भी लिख रखा है, उसका पूरा होना पक्का है।" यीशु जी ने उनको समझाया कि परमात्मा के वचन के अनुसार मुक्तिदाता को अपनी महिमा के पद मिलने से पहले बहुत दुःख-मुसीबत उठा कर मरना और तीसरे दिन फिर जीवित होना आवश्श्यक है। और यह सब कहने के बाद उनके सामने से यीशु जी चले गये।

शिष्यों के साथ फिर प्रभु यीशु की मुलाकात

(यहूना २१:३-१४)

इसके कुछ समय बाद पारस ने दूसरे साथियों से कहा, "मैं मछली पकड़ने के लिये जाता हु।" उन्होंने कहा, "हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं।" तब वे मछली पकड़ने के लिये नाव में चढ़े और सारी रात जांल डाली, लेकिन एक भी मछली नहीं मरी।

सुबह होते समय यीशु जी समुद्र के किनारे में आये, लेकिन शिष्यों ने उनको नहीं पहचाना कि वे यीशु जी हैं। यीशु जी ने उनसे कहा, "साथियो, तुम्हारे पास खाने के लिये कुछ है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हमारे पास कुछ भी नहीं है।" तब यीशु जी ने उनसे कहा, "नाव के दाहिनी ओर अपने जाल डाले, तब तुम को मछली मिलेगी।" तब उन्होंने अपने दाहिने ओर जाल डाली और उसमें इतनी अधिक मछली लगी की वे जाल को भी नहीं खींच सके।

तब योहन ने पारस से कहा, "ये तो प्रभु हैं!" यह सुनकर पारस ने जल्दी कुर्ता पहना क्योंकि उसने वह उतार रखा था। और वह यीशु जी के पास जाने के लिये पानी में कूद पड़ा। दूसरे चेले मछलियों से भरे जाल को खींचकर किनारे में ले गये। किनारे में आकर उन्होंने कोयले में मछली और रोटी रखी देखी। तब यीशु जी ने उनसे कहा, "तुम ने अभी जो मछली पकड़ रखी है, उनमें से थोड़ी लाओ।" पारस नाव में चढ़कर जाल को किनारे में खींच लाया। जाल में एक सौ तिर्पन बड़ी मछली थी, इतनी मछली उस जांल में होने पर भी वह न फटी।

तब यीशु जी ने उनसे कहा, "आओ, अभी खाना-पीना खा लो।" शिष्यों में से किसी को यह पूछने की हिम्मत भी न हुई कि आप कौन हैं? वे जानते थे की वे प्रभु हैं।

इसके बाद यीशु जी ने उनको रोटी और मछली खाने के लिये दीं।

पारस को प्रभु यीशु की माफी

(यहूना २१:१५-१७)

खाना खाने के बाद यीशु जी ने शमौन पारस से कहा, “शमौन, योहन के पुत्र, क्या तू इनसे अधिक प्रेम मुझे करता है?” उसने उत्तर दिया, “प्रभु, आप जानते हैं कि मैं आप को प्रेम करता हूं।” उन्होंने कहा, “मेरे बच्चों की देख-भाल कर।”

यीशु जी ने फिर दुसरे बार उससे कहा, “शमौन, योहन के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम करता है?” उसने कहा, “प्रभु, आप स्वयं जानते हैं कि मैं आप से प्रेम करता हूं।” यीशु जी ने कहा, “तब तू मेरे लोगों की देख-रेख कर।”

यीशु जी ने फिर तीसरे बार कहा, “शमौन, योहन के पुत्र, क्या तू मुझे प्रेम करता है?” यह सुनकर पारस को बहुत दुःख हुआ कि यीशु जी ने उससे तीसरे बार यह पूछा कि तू मुझ से प्रेम करता है? उसने फिर यह उत्तर दिया, “प्रभु, आप सब जानते हैं, आप को पता है कि मैं आप से प्रेम करता हूं!” फिर यीशु जी ने उससे कहा, “मेरे लोगों की देख-भाल कर।”

(यीशु जी ने पारस से तीन बार पूछा कि क्या तू मुझ से प्रेम करता है, क्योंकि पारस ने पहले यीशु जी का तीन बार इन्कार कर दिया था। लेकिन यीशु जी ने उसका इन्कार नहीं किया और उसे माफ किया, और उसे बताया कि तू फिर भी मेरी सेवा कर सकता है।)

प्रभु यीशु का परम स्वर्ग में उठाया जाना

(प्रेरितों १:१-१०, मती २८:१६-२०)

इसके बाद शिष्य एक पहाड़ में गये जहां जाने की आज्ञा यीशु जी ने उनको दे रखी थी। वहां पहुंचकर इन्होंने प्रभु यीशु कि बढ़ाई की। लेकिन किसी-किसी को शक भी हुआ।

तब यीशु जी ने इनसे कहा, “मुझे परम स्वर्ग और धरती में पूरा अधिकार दे रखा है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को मेरा शिष्य बनाये और उनको पिता परमात्मा, मैं उनका पुत्र और हमारे ईश-आत्मा के नाम से जल-दीक्षा दो। और मैने जो-जो आज्ञा तुम को दे रखी है, तुम वे सब उनको मानना

सिखाओ। देखो, मैं दुनिया के अन्त तक हमेशा तुम्हारे साथ रहुंगा!"

उन्होंने अपने शिष्यों को यह आज्ञा देकर कहा, "तुम मेरे जाने के बाद यरुशलेम को नहीं छोड़ना, पर परमात्मा के बातों के पूरा होने का इंतजार करना, जो मैने तुम को बता रखी थी। जैसे गुरु योहन ने तुम को जल-दीक्षा से शुद्ध किया वैसे ही अभी तुम को ईश-आत्मा से शुद्ध करा जाऐगा।"

शिष्यों ने उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या आप रोमियों को हराकर इस्राएली राज्य को अभी दुबारा बनाओगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "समय और काल के बारे में जो पिता परमात्मा ने ठहरा रखा है, उसके बारे में तुम नहीं सोचो। पर जब ईश-आत्मा तुम में आयेगा, तब तुम सामर्थ पाओगे। और यरुशलेम, यहूदिया, सामरिया और पूरे धरती के कोने-कोने में तुम मेरे गवाह होंगे।"

फिर उनके देखते-देखते यीशु जी उठाये गये, और बादल ने आकर उनको उनके आँखों से ओझल कर दिया।

जब वे उपर को देखे थे, तब अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके सामने खड़े होकर उन से कहने लगे, "हे गलीली लोगों, तुम आकाश की ओर क्या देख रहे हो? यह यीशु जी जिनको तुम परम स्वर्ग में जाते देख रहे हो, एक दिन वे दुबारा इसी तरह आयेंगे!" इसके बाद शिष्य फिर यरुशलेम आये।

प्रभु यीशु के शिष्यों ने दूसरे लोगों को बताया कि यीशु जी दुबारा जीवित हो गये। बहुत लोग विश्वास करके यह बात मानने लगे कि यीशु जी सच में हमारे मुक्तिदाता है। पर यहूदी नेताओं को यह बात अच्छी नहीं लगी। और वे विश्वासियों को सताने लगे। इसलिये उनमें से बहुत लोग इस्राएल देश छोड़ कर दूसरे देशों में रहने लगे, लेकिन वहां भी वे प्रभु यीशु के बारे में बताने लगे। इस प्रकार प्रभु यीशु का शुभ संदेश दुनिया के चारों ओर फैल गया। बहुत पंडित मानते हैं कि थोमा, जो प्रभु यीशु के विशेष शिष्यों में से एक थे, उसने भारत में आकर प्रभु का संदेश फैलाया। दूसरे लोगों ने प्रभु का वचन अफ्रीका और यूरोप के देशों में भी फैलाया। पूरी दुनिया में लोग यह सुनकर कि प्रभु ने हमारे लिये एक मुक्तिदाता को भेज रखा है, बहुत खुश हुए, और परमेश्वर को मानने लगे। और उन्होने प्रभु यीशु जी में यह विश्वास किया कि बस यही परमेश्वर के भेजे हुए मुक्तिदाता हैं।

कुमाउंनी मिं दुसॉर सुसमाचारोंक थ्याड़ हिस्सोंक दगाड़ मरकुसकि किताब जो कि यीशु ग्रंथॉक छन।

हिंदी में दूसरे सुसमाचारों के कुछ हिस्सों के साथ मरकुस की किताब जो कि यीशु ग्रंथ की हैं।

अंधेरे से उजाले की ओर